# सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

## कार्य परिषद् की बैठक

दिनांक - 12.11.2021
समय मध्याह्ण - 12:00 बजे से
स्थान - योग साधना केन्द्र

**1- प्रो॰ हरेराम त्रिपाठी, कुलपति- अध्यक्ष**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 2- | प्रो॰ रमेश प्रसाद | 3- | प्रो॰ महेन्द्र पाण्डेय |
| 4- | प्रो॰ राजनाथ | 5- | प्रो॰ हरिप्रसाद अधिकारी |
| 6- | डा॰ दिनेश कुमार गर्ग | 7- | डा॰ विजय कुमार शर्मा |
| 8- | प्रो॰ योगेश चन्द्र दूबे | 9- | प्रो॰ सीमा सिंह (Online) |
| 10- | डा॰ अरूण कुमार राय | 11- | डा॰ विजेन्द्र कुमार आर्य |
| 12- | वित्त अधिकारी | 13- | कुलसचिव - सचिव |

**मंगलाचरण- डॉ॰ विजय कुमार शर्मा**

सर्वप्रथम कुलपति महोदय ने परिषद् के माननीय सदस्यों का अभिनन्दन करते हुए कार्यपरिषद् की कार्यवाही प्रारम्भ करने की अनुमति प्रदान की।

**कार्यक्रम संख्या-1-** कार्यपरिषद् की बैठक दिनांक 28.07.2021 की कार्यवाही की पुष्टि।

**विचार-विमर्श के अनन्तर कार्यपरिषद् ने विगत बैठक दिनांक 28.07.2021 के कार्यवाही की पुष्टि की।**

**कार्यक्रम संख्या-2-** कार्यपरिषद् की बैठक दिनांक 28.07.2021 में लिये गये निर्णयों के क्रियान्वयन की सूचना।

कार्यपरिषद् के समक्ष परिषद् की विगत बैठक दिनांक 28.07.2021 में लिये गये निर्णयों के क्रम में क्रियांवयन रिर्पोट प्रस्तुत की गयी। क्रियांवयन रिर्पोट पर विचार के क्रम में परिषद् ने विगत बैठक में अध्यक्ष की अनुमति से अन्य विषयों पर विचार के बिन्दु -3 पुस्तकालय संवर्ग (सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष/उप पुस्तकालयाध्यक्ष/ पुस्तकालयाध्यक्ष) को मा॰ उच्च न्यायालय, इलाहाबाद में योजित याचिका संख्या-55164/2017 में पारित निर्णय दिनांक 21.11.2017 एवं तत्सम्बन्ध में प्राप्त विधिक राय के क्रम में संत्रात लाभ अनुमन्य करने के संदर्भ में लिये

गये निर्णय पर पुनः विचार करते हुए निर्णय पर पुनः विचार करते हुए निर्णय लिया कि पुस्तकालय संवर्ग (सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष/उप पुस्तकालयाध्यक्ष/ पुस्तकालयाध्यक्ष) को शिक्षकों की भाँति 62 वर्ष की अधिवर्षिता वय पूर्ण होने के पश्चात् सत्रांत लाभ प्रदान करने हेतु कोई शासनादेश नही है। अतः पुस्तकालय संवर्ग (सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष/उप पुस्तकालयाध्यक्ष/ पुस्तकालयाध्यक्ष) के कर्मियों को शिक्षकों की भाँति संत्रात लाभ न अनुमन्य किया जाय। साथ ही कार्यपरिषद् ने यह भी निर्णय लिया कि श्री जितेन्द्र कुमार तिवारी सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष दिनांक 18.07.2021 अपनी 62 वर्ष की अधिवर्षितावय पूर्ण करने के पश्चात् कार्यपरिषद् की बैठक दिनांक 28.07.2021 में हुए निर्णय के क्रम में सत्रांत लाभ के अंतर्गत अभी तक कार्यरत है। अतः श्री जितेन्द्र कुमार तिवारी से दिनांक 12.11.2021 के बाद से कार्य लेना बंद किया जाये तथा उक्त अवधि में किये गये कार्य का वेतन सहित अन्य भत्ते का भुगतान किया जाय।

क्रियांवयन रिर्पोट पर विचार के क्रम में कार्यपरिषद् ने यह भी निर्देश दिया कि-

1- शिक्षण एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के वार्षिक निष्पत्ति प्रतिवेदन, वार्षिक वेतन वृद्धि प्रदत्त करने से पूर्व प्रतिवर्ष 30 जून से 15 जुलाई के मध्य अवश्य प्राप्त कर ली जाय।
2- आवास आवंटन समीक्षा समिति की संस्तुति के क्रम में आवास आवंटन नियमावली के अंतर्गत कार्यवाही सुनिश्चित की जाय।

तत्पश्चात् परिषद् अन्य क्रियांवयन रिर्पोट से अवगत होते हुए कृत कार्यवाही पर अपनी स्वीकृति प्रदान की।

**कार्यक्रम संख्या -3-** माननीय उच्च न्यायालय, इलाहाबाद (प्रयागराज) द्वारा यचिका संख्या 24208/2019 कमेटी ऑफ मैनेजमेण्ट श्री त्रिवेणी संस्कृत महाविद्यालय बनाम स्टेट ऑफ यू॰पी॰ व अन्य में पारित अवमानना आदेश दिनांक 08.09.2021 के अनुपालन के संबंध में।

कार्यपरिषद् को अवगत कराया कि माननीय उच्च न्यायालय इलाहाबाद(प्रयागराज) द्वारा अवमानना याचिका संख्या-3744/2019, कमेटी ऑफ मैनेजमेण्ट श्री त्रिवेणी संस्कृत महाविद्यालय, प्रयागराज में पारित आदेश दिनांक 08.09.2021 के अनुपालन में अधोलिखित कार्यवाही की गयी है-

## सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

माननीय उच्च न्यायालय, इलाहाबाद( प्रयागराज ) द्वारा आख्यापित याचिका संख्या-3744/2019, [illegible] मैनेजमेन्ट श्री त्रिवेणी संस्कृत महाविद्यालय, प्रयागराज में पारित आदेश दिनांक 08-09-2021 के अनुपालन के सम्बन्ध में।

| क्र.सं. | महाविद्यालय का नाम | कृत कार्यवाही |
|---|---|---|
| 1. | त्रिवेणी संस्कृत महाविद्यालय, प्रयागराज। (याचिका सं.2408/2018) | निस्तारित (मान्यता अनुमोदन निर्गत)। |
| 2. | [illegible] संस्कृत महाविद्यालय, [illegible], बलिया (याचिका सं.12644/2018) | निस्तारित। |
| 3. | श्री [illegible] संस्कृत महाविद्यालय, अस्सी, वाराणसी (याचिका सं.25134/2018) | निस्तारित (प्रस्ताव वापस)। |
| 4. | [illegible] संस्कृत महाविद्यालय, बदायूं (1458/61) (याचिका सं.27190/2018) | प्रक्रियाधीन (अनुस्मारक प्रेषित)। |
| 5. | श्री आदर्श संस्कृत [illegible] महाविद्यालय, [illegible], जालौन(1542/62) (याचिका सं.27300/2018) | प्रक्रियाधीन (अनुस्मारक प्रेषित)। |
| 6. | श्री [illegible] संस्कृत महाविद्यालय, बदायूं (याचिका सं.27301/2018) | प्रक्रियाधीन (अनुस्मारक प्रेषित)। |
| 7. | श्री [illegible] संस्कृत महाविद्यालय, [illegible]पुर (याचिका सं.27419/2018) (याचिका सं.27437/2018) | प्रक्रियाधीन (अनुस्मारक प्रेषित)। |
| 8. | श्री[illegible] सं०म०वि० [illegible] वाराणसी (याचिका सं.27487/2018) | पुनर्विचार हेतु प्रस्ताव [illegible]। |
| 9. | श्री [illegible] संस्कृत महाविद्यालय, अस्सी, वाराणसी (याचिका सं.27584/2018) | निस्तारित (प्रस्ताव वापस)। |
| 10. | श्री [illegible] संस्कृत महाविद्यालय, फतेहपुर (याचिका सं. 2771/2018) | प्रक्रियाधीन (अनुस्मारक प्रेषित)। |
| 11. | श्री [illegible] संस्कृत महाविद्यालय, [illegible], [illegible], देवरिया (याचिका सं. 27722/2018) | प्रक्रियाधीन (अनुस्मारक प्रेषित)। |
| 12. | [illegible], वाराणसी (याचिका सं. 774/2019) | प्रक्रियाधीन। |
| 13. | आदर्श [illegible] संस्कृत महाविद्यालय, [illegible] (1269/61) (याचिका सं. 1011/2019) | प्रक्रियाधीन (अनुस्मारक प्रेषित)। |
| 14. | [illegible] गुरुकुल सं०म०वि०,[illegible] वाराणसी (याचिका सं. 1094/2019) | प्रक्रियाधीन ([illegible] संस्कृत [illegible] हेतु महाविद्यालय द्वारा समय मांगा गया है)। |
| 15. | श्री [illegible] संस्कृत महाविद्यालय, [illegible], [illegible], गोरखपुर(1146/61) (याचिका सं. 1740/2019) | प्रक्रियाधीन ( महाविद्यालय से [illegible])। |
| 16. | श्री [illegible] संस्कृत महाविद्यालय, [illegible], गाजीपुर (1594/61) (याचिका सं. 2014/2019) | प्रक्रियाधीन (अनुस्मारक प्रेषित)। |
| 17. | [illegible] संस्कृत महाविद्यालय [illegible], फैजाबाद (याचिका सं. 3002/2019) (याचिका सं. 4399/2019) | प्रक्रियाधीन। |
| 18. | श्री [illegible] संस्कृत महाविद्यालय, [illegible], वाराणसी (याचिका सं. 3115/2019) | निस्तारित (प्रस्ताव वापस)। |
| 19. | श्री [illegible] ब्रह्मचर्य संस्कृत महाविद्यालय, झूंसी, प्रयागराज (4147/78) (याचिका सं. 3194/2019) | प्रक्रियाधीन (अनुस्मारक प्रेषित)। |
| 20. | [illegible] गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय, [illegible], मिर्जापुर (याचिका सं. 3214/2019) | प्रक्रियाधीन (अनुस्मारक प्रेषित)। |
| 21. | आदर्श श्री हनुमत संस्कृत महाविद्यालय, जौनपुर (1287/61) (याचिका सं. 3349/2019) | प्रक्रियाधीन। |
| 22. | श्री चण्डी मंदिर रामस्वरूप गुप्त आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, जौनपुर (1332/61) (याचिका सं. 4470/2019) | प्रक्रियाधीन (अनुस्मारक प्रेषित)। |
| 23. | पंचायती स्वामी ब्रह्मानन्द संस्कृत महाविद्यालय नया बाजार, बस्ती (1827/61) (याचिका सं. 4485/2019) | प्रक्रियाधीन। |
| 24. | श्री वैष्णव भगवान देशराजसूरी, संस्कृत महाविद्याल, जौनपुर (1352/61) (याचिका सं. 4543/2019) | प्रक्रियाधीन (अनुस्मारक प्रेषित)। |
| 25. | श्री वैंकटेश परांकुश सं.म.वि., अस्सी, वाराणसी | प्रक्रियाधीन। |
| 26. | ब्रह्मचारी संस्कृत महाविद्यालय, वाराणसी | प्रक्रियाधीन । |
| 27. | पायानन्द गिरी संस्कृत महाविद्यालय, वाराणसी (1298/61) | निस्तारित (प्रस्ताव वापस)। |
| 28. | ऋषिकुल सं०म०वि०, सिसवा बाजार, महराजगंज | प्रक्रियाधीन। |
| 29. | श्री हरदेवदास नवमल बैरोलिया संस्कृत महाविद्यालय, टेढ़ीनीम, वाराणसी(1776/61) | प्रक्रियाधीन। |
| 30. | नेपाली संस्कृत महाविद्यालय, मंगलागौरी, वाराणसी | प्रक्रियाधीन। |
| 31. | श्री कबीर आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, कबीर चौरा, वाराणसी | प्रक्रियाधीन। |

08/11/2021 08.11.21 08/11/2021 9/11/2021

**कार्यपरिषद् कृत कार्यवाही से अवगत हुयी तथा सम्पुष्टि की।**

**कार्यक्रम संख्या-4-** उत्तर प्रदेश शासन के पत्र संख्या-1651/सत्तर-1-2021-16(87)/2018, दिनांक 22 अक्टूबर, 2021 पर विचार।

कार्यपरिषद् के समक्ष अधोलिखित उत्तर प्रदेश शासन के पत्र संख्या-1651/सत्तर-1-2021-16(87)/2018, दिनांक 22 अक्टूबर, 2021 विचारार्थ प्रस्तुत किया गया-

संख्या–1651 / सत्तर–1–2021–16(87) / 2018

प्रेषक,
मनोज कुमार,
विशेष सचिव,
उत्तर प्रदेश शासन।

सेवा में,
1. कुलपति,
समस्त राज्य विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश।
2. निदेशक,
उच्च शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज।

उच्च शिक्षा अनुभाग–1 लखनऊ: दिनांक: २२ अक्टूबर, 2021

विषय: सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से सम्बद्ध अशासकीय सहायता प्राप्त संस्कृत महाविद्यालयों में नितान्त अस्थायी रूप से मानदेय पर शिक्षकों की व्यवस्था के संबंध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषय के सम्बन्ध में मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि शासन के पत्र संख्या–1650 / सत्तर–1–2021–16(87) / 2018 दिनांक 22 अक्टूबर, 2021 द्वारा सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से सम्बद्ध अशासकीय सहायता प्राप्त संस्कृत महाविद्यालयों में शिक्षकों के नियमित रूप से नियुक्ति के उपरान्त कार्यभार ग्रहण करने तक संस्कृत शिक्षकों के रिक्त पदों को कार्यहित में विकल्प के रूप में सेवानिवृत्त शिक्षकों से 70 वर्ष की उम्र तक कतिपय शर्तों के अधीन निश्चित मानदेय पर अध्यापन कार्य लिये जाने का निर्णय लिया गया है।

विगत 03 वर्षों में अध्ययनरत छात्रों की संख्या को आधार मानते हुए छात्र–शिक्षक अनुपात को ध्यान में रखते हुए ही न्यूनतम आवश्यकता के अनुसार पदों को भरे जाने की कार्यवाही की जायेगी।

2– इस सम्बन्ध में कुलसचिव, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के पत्र संख्या–कु0 स0 3090 / 2021 दिनांक 23 सितम्बर, 2021 से प्राप्त सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से सम्बद्ध अशासकीय सहायता प्राप्त संस्कृत महाविद्यालयों में रिक्त प्राचार्य एवं शिक्षकों के पदों का विवरण संलग्न कर सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित है।

संलग्नक–यथोक्त।

भवदीय,
(मनोज कुमार)
विशेष सचिव।

संख्या–1651(1) / सत्तर–1–2021–तद्दिनांक

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित :–
(1) समस्त क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी, उत्तर प्रदेश।
(2) कुलसचिव, समस्त राज्य विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश।
(3) गार्ड फाइल।

आज्ञा से,
(राम जन्म चौहान)
अनु सचिव।

उपरोक्त शासनादेश पर विचार-विमर्श के पश्चात् कार्यपरिषद् ने शासन के पत्र संख्या-1651/सत्तर-1-2021-16(87)/2018, दिनांक 22 अक्टूबर, 2021 के अनुसार कार्यवाही किये जाने पर अपनी सहमति प्रदान की।

**कार्यक्रम संख्या-5**- श्री राज्यपाल/कुलाधिपति के अपर मुख्य सचिव के पत्रांक ई॰5862/जी॰एस॰, दिनांक 03 सितम्बर, 2021 पर विचार।

कार्यपरिषद् के समक्ष मा॰ कुलाधिपति के अपर मुख्य सचिव के अधोलिखित पत्रांक ई॰-5862/जी॰एस॰, दिनांक 03 सितम्बर, 2021 विचारार्थ प्रस्तुत किया गया-

**राज्यपाल सचिवालय उत्तर प्रदेश**
**लखनऊ–226027**

पत्रांक : ई– 5862 /जी0एस0
दिनांक : 03, सितम्बर, 2021

प्रेषक,

श्री राज्यपाल/कुलाधिपति के अपर मुख्य सचिव,
उत्तर प्रदेश।

सेवा में,

कुलपति,
डा0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय,
लखनऊ।

महोदय,

विश्वविद्यालयों के विभिन्न शैक्षणिक पदों पर सीधी भर्ती के माध्यम से नियुक्ति हेतु साक्षात्कार में पारदर्शिता के बारे में मा0 कुलाधिपति के आदेश दिनांक 18 मई, 2021 तथा दिनांक 02 जुलाई, 2021 के बारे में कृपया अपने पत्र संख्याःअ0क0प्रा0वि0/कु0का0/2021/11957, दिनांक 02 सितम्बर, 2021 का सन्दर्भ ग्रहण करने का कष्ट करें।

उक्त पत्र में आपके द्वारा निम्न बिन्दु पर मार्गदर्शन मांगा गया है–

"......... सहायक आचार्य/सह आचार्य एवं आचार्य अन्तिम चयन :

- "प्रथम चरण–(Basic Academic Score एवं API+लिखित परीक्षा (100+40)/Basic Academic Score एवं API)" तथा "द्वितीय चरण–साक्षात्कार", के दोनो चरणों के अंकों के योग के आधार पर किया जाना है।

अथवा

- केवल द्वितीय चरण–साक्षात्कार" के आधार पर ही किया जाना है एवं "प्रथम चरण–(Basic Academic Score एवं API+लिखित परीक्षा (100+40)/Basic Academic Score एवं API)" Shortlisting हेतु होगा।"

उपरोक्त जिज्ञासा के क्रम में निम्नवत् स्थिति स्पष्ट की जाती है–

1. आदेश दिनांक 02 जुलाई, 2021 में यह स्पष्ट रूप से वर्णित किया गया है कि सहायक आचार्य/सह आचार्य एवं आचार्य के पद पर चयन की प्रकिया के दो चरण होंगे। प्रथम चरण शार्टलिस्टिंग का होगा और दूसरा चरण साक्षात्कार का होगा।

2. पत्र दिनांक 02 जुलाई, 2021 के बिन्दु संख्या–अ के 2, 3 व 4 की व्यवस्था के अनुसार सहायक आचार्य के सन्दर्भ में शार्टलिस्टिंग की प्रक्रिया 140 अंकों के आधार पर होगी। शार्टलिस्टिंग के बारे में आदेश दिनांक 18.05.2021 में दी गयी व्यवस्था के अनुसार पारदर्शिता की व्यवस्था का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित किया जायेगा। उपरोक्तानुसार शार्टलिस्टेड अभ्यर्थियों का शिक्षण कौशल की जानकारी (कम्प्यूटर पर कार्य करने की जानकारी तथा कक्षा के समक्ष प्रस्तुतीकरण) 20 अंकों की तथा साक्षात्कार 10 अंकों का सम्पन्न कराया जायेगा और इस प्रकार 30 अंकों के आधार पर साक्षात्कार की प्रक्रिया सम्पन्न करते हुए इन्हीं 30 अंकों पर आधारित परिणाम घोषित किया जायेगा। इसमें शार्टलिस्टिंग के लिए निर्धारित 140 अंक नहीं जोड़े जायेंगे।

3. पत्र दिनांक 02 जुलाई, 2021 के बिन्दु संख्या–ब के 2, 3 व 4 की व्यवस्था के अनुसार सह आचार्य एवं आचार्य के सन्दर्भ में शार्टलिस्टिंग की प्रक्रिया सम्पन्न होगी। शार्टलिस्टिंग के बारे में आदेश दिनांक 18.05.2021 में दी गयी व्यवस्था के अनुसार पारदर्शिता की व्यवस्था का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित किया जायेगा। उपरोक्तानुसार शार्टलिस्टेड अभ्यर्थियों का साक्षात्कार 20 अंकों का सम्पन्न कराया जायेगा और इस प्रकार 20 अंकों के आधार पर साक्षात्कार की प्रक्रिया सम्पन्न करते हुए इन्हीं 20 अंकों पर आधारित परिणाम घोषित किया जायेगा। इसमें शार्टलिस्टिंग के लिए निर्धारित अंक नहीं जोड़े जायेंगे।

भवदीय,

( महेश कुमार गुप्ता )
अपर मुख्य सचिव श्री राज्यपाल।

प्रतिलिपि कुलपतिगण, समस्त राज्य विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, निदेशक, संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ/निदेशक, डा0 राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

03/09/21
( डा0 पंकज एल0 जानी )
विशेष कार्याधिकारी, शिक्षा श्री राज्यपाल।

उपरोक्त पत्र पर विचार-विमर्श करने के पश्चात् कार्यपरिषद् ने पत्रांक ई॰-5862/जी॰एस॰, दिनांक 03 सितम्बर, 2021 में दिये गये निर्देश के अनुसार नियुक्ति सम्बन्धी कार्यवाही करने पर अपनी स्वीकृति प्रदान की।

**कार्यक्रम संख्या -6-** वित्त समिति की बैठक दिनांक 11.11.2021 की संस्तुतियों पर विचार।

कार्यपरिषद् के समक्ष वित्त समिति की बैठक दिनांक 11.11.2021 में की गयी अधोलिखित संस्तुतियों को प्रस्तुत की गयी-

## वित्त समिति की बैठक

*दिनांक* : **11.11.2021**
*समय* : *मध्यान्ह 12.00 बजे*
*स्थान* : *कुलपति महोदय का कार्यालयीय कक्ष*

### उपस्थिति

| | | | |
|---|---|---|---|
| (1) | प्रो0 हरेराम त्रिपाठी, कुलपति | – | अध्यक्ष |
| (2) | डॉ• ज्ञान प्रकाश वर्मा<br>क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी<br>वाराणसी। | – | सदस्य<br>(वर्चुवल उपस्थित) |
| (3) | श्री राजकुमार शुक्ला,<br>अपर निदेशक, कोषागार एवं पेंशन<br>वाराणसी मण्डल, वाराणसी<br>प्रतिनिध<br>विषेष सचिव, वित्त विभाग<br>उ0प्र0 शासन, लखनऊ। | – | सदस्य |
| (4) | प्रो• चॉद किरण सालूजा,<br>निदेशक,संस्कृत सम्वर्धन प्रतिष्ठान,<br>1104/5, मंदिर मार्ग, घोषाला मार्ग,<br>डोरीवालान, नई दिल्ली–110006, | – | सदस्य<br>(वर्चुवल उपस्थित) |
| (5) | श्री अमित कुमार श्रीवास्तव<br>वित्त अधिकारी | – | सदस्य–सचिव |
| 6) | श्री केशलाल<br>प्रतिनिधि कुलसचिव | – | सदस्य |
| (7) | प्रो• राजनाथ,<br>परीक्षा नियंत्रक | – | सदस्य |

### कार्यवृत्त

वित्त अधिकारी द्वारा समिति के सदस्यों का स्वागत किया गया।

**कार्यक्रम संख्या 1–** वित्त समिति की विगत बैठक दिनांक 27.07.2021 के कार्य विवरण की सम्पुष्टि तथा कृत कार्यवाही की सूचना।

**प्रस्तुत प्रस्ताव–** वित्त समिति की विगत बैठक दिनांक 27.07.2021 के कार्यवृत्त की छायाप्रति संलग्न है। विगत कार्यविवरण की सम्पुष्टि किये जाने का प्रस्ताव तथा कार्यवाही के सम्बन्ध में अवगत कराना है कि वित्त समिति में लिये गये निर्णय के अनुसार अन्य विविध पुरस्कार, अन्य विविध विकास, अन्य विविध छात्रवृत्ति नाम से नया खाता खोला गया। अद्यतन स्थिति निम्नवत है –

| क्र• | खाता नाम | कुल संख्या | स्थानान्तरित संख्या | शेष खातो की संख्या |
|---|---|---|---|---|
| 1 | अन्य विविध पुरस्कार | 6 | 2 | 4 |
| 2 | अन्य विविध विकास | 23 | 2 | 21 |
| 3 | अन्य विविध छात्रवृत्ति | 14 | 4 | 10 |
| 4 | मेडल खाता | 1 | 1 | 0 |
| 5 | सामान्य मद | 2 | 0 | 2 |
| | **योग** | **46** | **9** | **37** |

गौड़ लेखा के विभिन्न 37 खातो को DEAF Account RBI Mode में आ जाने के कारण अग्रेतर कार्यवाही करने हेतु बैंक को पत्रांक ले• 1023/21 दिनांक 18.08.2021 के माध्यम से निर्देशित किया गया।

विश्वविद्यालयीय छात्रवृत्ति, वर्सरी छात्रवृत्ति प्राप्त करने के सम्बन्ध में शासन को पत्र प्रेषित किया गया। शुल्क वृद्धि का कार्यालय ज्ञाप पत्रांक 117/21 दिनांक 19.08.2021 द्वार प्रसारित किया गया है। श्री सद्गुरू राम सिंह महाराजपीठ के निर्देशक द्वारा मानदेय सहित कतिपय मदो में वृद्धि का प्रस्ताव आज की बैठक में प्रस्तुत किया जा रहा है। सरकारी कार्यो के सुचारू रूप से संचालन के लिये कुलपति, वित्त अधिकारी, कुलसचिव एवं परीक्षा नियंत्रक को 1–1 मोबाईल एवं सिम कार्ड उपलब्ध कराये जाने के निर्णय को वर्तमान में स्थगित रक्खा गया है।

**निर्णय–** कार्य विवरण की सम्पुष्टि की गयी तथा कृत कार्यवाही से समिति अवगत हुई।

**कार्यक्रम संख्या 2–** एल•एल•एम• विधिशास्त्र स्नातकोत्तर डिप्लोमा, हिन्दू विधिशास्त्र पाठ्यक्रम के शुल्क निर्धारण के परिप्रेक्ष्य में।

**प्रस्तुत प्रस्ताव –** उक्त के अनुमोदन पर विचार।

**निर्णय–** प्रस्तुत प्रस्ताव पर शैक्षणिक समिति गठित करने की संस्तुति प्रदान की गयी।

**कार्यक्रम संख्या 3–** शास्त्री (बी•ए•) योग एवं आचार्य (एम•ए•) योग एवं पी•जी• योग डिप्लोमा पाठ्यक्रम के शुल्क निर्धारण के परिप्रेक्ष्य में विचार।

**प्रस्तुत प्रस्ताव –** उक्त के अनुमोदन पर विचार।

**निर्णय–** प्रस्तुत प्रस्ताव में सम्मिलित प्रकरण दिनांक 02.11.2021 के द्वारा विचार किया गया जो बिन्दु 5 पर प्रस्तुत है।

**कार्यक्रम संख्या 4–** हिन्दू अध्ययन (एम•ए•) स्नातकोत्तर पाठयक्रम के शुल्क निर्धारण के परिप्रेक्ष्य में विचार।

**प्रस्तुत प्रस्ताव –** उक्त के अनुमोदन पर विचार।

**निर्णय–** प्रस्तुत प्रकरण पर अवगत कराया गया कि बिन्दु 5 पर उल्लिखित बिन्दु के समान पाठ्यक्रम एवं शुल्क के निर्धारण के समान ही निर्धारण होना है। उक्त के अनुसार शुल्क रू• 6500/– प्रति सेमेस्टर निर्धारित करने की संस्तुति प्रदान की गई।

**कार्यक्रम संख्या 5–** हिन्दू अध्ययन पाठ्यक्रम के शुल्क निर्धारण हेतु गठित समिति की बैठक दिनांक 02.11.2021 द्वारा संस्तुत किये गये शुल्क पर विचार –

(i) चार वर्षीय सेमेस्टर पाठ्यक्रम के लिये संस्तुत शुल्क रू• 5000/– प्रति सेमेस्टर प्रवेशावेदन पत्र हेतु रू• 500/– परीक्षा शुल्क रू• 1000/–

(ii) एक वर्षीय स्नातकोत्तर योग डिप्लोमा पाठ्यक्रम का शुल्क रू• 5000/– प्रति सेमेस्टर, आवेदन पत्र शुल्क रू• 500/– तथा परीक्षा शुल्क रू• 1000/– ।

(iii) शास्त्री/बी•ए•(योग) एवं आचार्य/एम•ए•(योग) पाठ्यक्रम हेतु प्रति सेमेस्टर रू• 6500/– ।

**प्रस्तुत प्रस्ताव –** उक्त के अनुमोदन पर विचार।

**निर्णय–** प्रस्तुत प्रस्ताव पर संस्तुति प्रदान की गयी।

**कार्यक्रम संख्या 6–** श्री सदगुरू रामसिंह जी महाराज पीठ की बैठक दिनांक 27.10.2021 के द्वारा संस्तुत पर कार्योत्तर स्वीकृति प्रदान किया जाना।

**प्रस्तुत प्रस्ताव –** श्री सदगुरू रामसिंह जी महाराज पीठ संचालन समिति की बैठक दिनांक 27.10.2021 को सम्पन्न हुई जिसमें निम्नलिखित निर्णय लिया गया –

निदेशिका के वर्तमान मानदेय रू॰ 18000/– प्रतिमाह में रू॰ 7000/– की वृद्धि करते हुए रू॰ 25,000/– प्रतिमाह तथा परिचारक संजय कुमार के वर्तमान पारिश्रमिक रू॰ 5,000/– प्रतिमाह में रू॰ 3,000/– की वृद्धि करते हुए रू॰ 8,000/– प्रतिमाह 01 जुलाई, 2021 से करने का निर्णय लिया गया। 01 जुलाई, 2021 से 31 अक्टूबर, 2021 तक के मानदेय वृद्धि का एरियर अक्टूबर माह के मानदेय का साथ देय होगा। उक्त पर कार्योत्तर स्वीकृति का प्रस्ताव है।

**निर्णय–** प्रस्तुत प्रस्ताव पर संस्तुति प्रदान की गयी। उक्त के साथ–साथ संचालन समिति की बैठक बिन्दु 1 के अनुसार एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन हेतु अनुमानित व्यय रू॰ 60000/–(साठ हजार) पर सहमति प्रदान की गयी। श्री सदगुरू राम सिंह जी महाराज पीठ द्वारा धन प्राप्त न होने पर भुगतान स्थगित रखने की संस्तुति की गयी।

**कार्यक्रम संख्या 7–** आगामी शैक्षणिक सत्र 2022–23 हेतु प्रवेश सहित परीक्षा शुल्क आदि में वृद्धि के प्रस्ताव पर विचार।

**प्रस्तुत प्रस्ताव –** उक्त के अनुमोदन पर विचार।

**निर्णय–** प्रस्तुत प्रस्ताव पर विचार के अनन्तर आगामी शैक्षणिक सत्र 2022–23 हेतु प्रवेश सहित परीक्षा शुल्क आदि में वृद्धि हेतु अधोलिखित समिति का गठन किया गया– 1. प्रो॰ चॉद किरण सालुजा, निदेशक,संस्कृत सम्वर्धन प्रतिष्ठान, नई दिल्ली 2. समस्त संकायाध्यक्ष 3. परीक्षा नियन्त्रक 4. उपकुलसचिव शैक्षिक 5. सहायक कुलसचिव (लेखा)।

**कार्यक्रम संख्या 8–** अध्यक्ष महोदय की अनुमति से अन्य विषयों पर विचार।

8(i) विश्वविद्यालय परिसर की रिक्त जमीन पर निर्माण ईकाई द्वारा निर्माण कार्य हेतु अधोलिखित प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया–

| क्र॰ | परियोजना का विवरण | आगणन मूल्य (रू॰ लाख में) |
|---|---|---|
| 1 | सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में गेस्ट हाउस का निर्माण कार्य | 944.68 |
| 2 | सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में 300 बेडेड क्षमता के छात्रावास का निर्माण कार्य | 1906.62 |
| 3 | सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में शिक्षा शास्त्र ब्लाक का निर्माण कार्य | 2322.40 |
| 4 | सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में 750 क्षमता के ऑडिटोरियम हाल का निर्माण कार्य | 1993.86 |
| 5 | सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में बाह्य विकास का कार्य | 485.05 |
| 6 | सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में क्रीड़ा प्रागंण विकास कार्य | 3605.11 |

**निर्णय–** प्रस्तुत प्रस्ताव राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार को प्रेषित करने की संस्तुति की गयी।

8(ii) शुल्क नवीनीकरण समिति की बैठक दिनांक 08.11.2021 की बैठक में अधोलिखित प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया –

| क्र॰ | विद्यावारिधि (Ph.D) | वर्तमान | प्रस्तावित |
|---|---|---|---|
| 1 | कोर्स वर्क शुल्क | 25000.00 | 30000.00 |
| 2 | पंजीकरण शुल्क | – | 2000.00 |
| 3 | शोधप्रबन्ध परीक्षण शुल्क | 10000.00 | 15000.00 |
| 4 | कोर्स वर्क एवं प्री सब्मिशन आदि प्रमाणपत्रों का प्रतिलिपि शुल्क | | 100.00 प्रति प्रमाण पत्र |
| **पारिश्रमिक** | | | |
| 1 | शोधप्रबन्ध परीक्षण | 750.00 | 1500.00 |
| 2 | मौखिक परीक्षा | 600.00 | 1500.00 |
| 3 | शोध प्रवेश परीक्ष (प्राश्निक) | – | 50.00 प्रति प्रश्न पत्र |
| 4 | एम॰एड॰ प्रवेश परीक्ष (प्राश्निक) | – | 40.00 प्रति प्रश्न पत्र |
| 5 | सहायक आचार्य नियुक्ति हेतु प्रश्नपत्र निर्माण | – | 100.00 प्रति प्रश्न पत्र |
| **वाचस्पति (D.Lit.)** | | | |
| 1 | पंजीकरण शुल्क | 5000.00 | 25000.00 |
| 2 | शोधप्रबन्ध परीक्षण शुल्क | 10000.00 | 25000.00 |
| **पारिश्रमिक** | | | |
| 1 | शोधप्रबन्ध परीक्षण | 750.00 | 1500.00 |
| 2 | मौखिक परीक्षा | 600.00 | 1500.00 |
| **एम॰डी॰/एम॰एस॰** | | | |
| 1 | पंजीकरण आवेदनपत्र मूल्य | 500.00 | 1000.00 |
| 2 | पंजीकरण शुल्क | 2500.00 | 5000.00 |
| 3 | शोधप्रबन्ध परीक्षण शुल्क | 15000.00 | 20000.00 |
| **पारिश्रमिक** | | | |
| 1 | शोधप्रबन्ध मूल्यांकन | – | 750.00 |
| 2 | मौखिक परीक्षा (प्रति छात्र) | – | 500.00 |

विशेष : समस्त शुल्को में अनु॰ जाति /जनजाति के छात्रो को 50 प्रतिशत की छूट अनुमन्य होगी

(क) विद्यावारिधि, कार्यपरिषद, वित्त समिति की बैठक के लिए सिंटिंग चार्ज रू॰ 2000.00 प्रतिदिन (बाह्य सदस्यो हेतु)

(ख) साक्षात्कार के लिये सिटिंग चार्ज ( प्रति बैठक, प्रति विशेषज्ञ, प्रति दिन ) रू॰ 3000.00 न्यूनतम, अधिकतम रू॰ 5000.00 एक दिन में एकाधिक बैठक में भाग लेने पर।

(ग)सम्बद्धता – सम्बद्धता शुल्क रू॰ 25000.00 के स्थान पर 50000.00 तथा रू॰ 10000.00 के स्थान पर रू॰ 20000.00

समिति ने दिनांक 31.12.2020 तक सम्बद्धता हेतु आवेदन प्रस्तुत करने वाले महाविद्यालय पुरानी दर पर तथा 1.1.2021 से आवेदन पत्र प्रस्तुत करने वाले पुनरीक्षित दर पर शुल्क जमा करेंगे। यह भी कि पुराने मान्यता प्राप्त महाविद्यालयों की मान्यता व सम्बद्धता की समीक्षा की जाये तथा सम्बद्धता शुल्क की प्रति पॉच वर्ष में पुनः समीक्षा की जाय।

**निर्णय–** उक्त प्रस्तुत प्रस्ताव पर संस्तुति प्रदान की गयी।

8(iii) कुलपति कैम्प कार्यालय में अत्यावश्यक कार्य हेतु कार्मिको को अतिरिक्त रूप से भुगतान किये जाने पर सहमति प्रदान की गयी। इस पर E.P.F/E.S.I. का भुगतान नही किया जायेगा।

8(iv) लेखानुभाग के दफ्तरी के भत्ते को रू॰ 50/– के स्थान पर रू॰ 500/– प्रतिमाह किये जाने की संस्तुत की गयी।

वित्त अधिकारी/सदस्य सचिव
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी।

**विचार-विमर्श के अनन्तर कार्यपरिषद् ने सर्वसम्मत्ति से वित्त समिति की बैठक दिनांक 11.11.2021 में की गयी संस्तुतियों पर अपनी स्वीकृति प्रदान की।**

**कार्यक्रम संख्या-7-** विद्या परिषद् की बैठक दिनांक 11.11.2021 की संस्तुतियों पर विचार।

कार्यपरिषद् के समक्ष विद्यापरिषद् की बैठक दिनांक 11.11.2021 में की गयी अधोलिखित संस्तुतियों को प्रस्तुत किया गया-

## विद्या परिषद् की बैठक

दिनांक - 11.11.2021
समय अपराह्ण - 3:00 बजे से
स्थान - योग साधना केन्द्र

**उपस्थिति**

**1- प्रो. हरेराम त्रिपाठी, कुलपति- अध्यक्ष**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 2- | प्रो. महेन्द्र पाण्डेय | 3- | डा. विजय कुमार पाण्डेय |
| 3- | प्रो. सुधाकर मिश्र | 5- | प्रो. हीरक कान्ति चक्रवर्ती |
| 6- | प्रो. अमित कुमार शुक्ल | 7- | प्रो. राघवेन्द्र जी दूबे |
| 8- | प्रो. रामकिशोर त्रिपाठी | 9- | प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी |
| 10- | प्रो. शैलेश कुमार मिश्र | 11- | प्रो. जितेन्द्र कुमार |
| 12- | प्रो.रामपूजन पाण्डेय | 13- | प्रो. प्रेम नारायण सिंह |
| 14- | प्रो. हरिशंकर पाण्डेय | 15- | प्रो. शम्भुनाथ शुक्ल |
| 16- | प्रो. विधु द्विवेदी | 17- | प्रो. राजनाथ |
| 18- | प्रो. कमलाकान्त त्रिपाठी | 19- | डा. दिनेश कुमार गर्ग |
| 20- | डा. विद्या कुमारी चन्द्रा | 21- | डा. रविशंकर पाण्डेय |
| 22- | डा. विजय कुमार शर्मा | 23- | पद्मश्री डॉ.चमू कृष्णशास्त्री |
| 24- | प्रो. कृष्णकान्त शर्मा | 25- | प्रो. ललित कुमार त्रिपाठी (Online) |
| 26 - | प्रो. सुदेश शर्मा | 27 - | प्रो. मुरलीधर शर्मा (Online) |
| 28- | कुलसचिव-सचिव | | |

**मंगलाचरण - प्रो. महेन्द्र पाण्डेय**

सर्वप्रथम कुलपति महोदय ने विद्यापरिषद् में सहयोजित माननीय सदस्यों पद्मश्री डॉ.चमू कृष्णशास्त्री, प्रो. कृष्णकान्त शर्मा, प्रो. सुदेश शर्मा तथा आन-लाईन माध्यम से परिषद् में उपस्थित मा. सदस्य प्रो. ललित कुमार त्रिपाठी तथा प्रो. मुरलीधर शर्मा का अभिनन्दन करते हुए कहा कि विद्यापरिषद् में सहयोजित माननीय सदस्यगण देश के विभिन्न भागों का प्रतिनिधित्व करते है और प्रतिष्ठित विद्वान् है, विद्यापरिषद् में इन विद्वानों की उपस्थिति से विश्वविद्यालय के सम्मान एवं प्रगति में वृद्धि होगी।

कुलपति महोदय के उद्बोधन के पश्चात् माननीय सदस्य पद्मश्री चमू कृष्णशास्त्री ने परिषद् को नवीन शिक्षा नीति एवं उससे संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन में होने वाले लाभों के संदर्भ में सदस्यों को अवगत कराया। तत्पश्चात् कुलपति महोदय ने विद्यापरिषद् की कार्यवाही प्रारम्भ करने की अनुमति प्रदान की।

**कार्यक्रम संख्या -1-** विद्यापरिषद् की बैठक दिनांक 26.07.2021 की कार्यवाही की पुष्टि।

**विचार-विमर्श के अनन्तर विद्या परिषद् ने परिषद् की विगत बैठक दिनांक 26.07.2021 की सम्पुष्टि की।**

**कार्यक्रम संख्या -2-** विद्यापरिषद् की बैठक दिनांक 26.07.2021 में लिये गये निर्णयों के क्रियान्वयन की सूचना।

**विद्यापरिषद् ने विगत बैठक दिनांक 26.07.2021 में लिये गये निर्णयों के क्रियांवयन के सन्दर्भ में प्रस्तुत सूचना पर विचार करते हुए परिषद् ने समस्त संकायों से प्राप्त पाठ्यक्रम को नयी शिक्षा नीति के अनुरूप करने के लिए एक बार और समीक्षा एवं परिष्कृत करने हेतु कुलपति महोदय को अधिकृत किया। तत्पश्चात् परिषद् अन्य क्रियांवयन रिर्पोट से अवगत हो कृत कार्यवाही पर अपनी स्वीकृति प्रदान की।**

**कार्यक्रम संख्या -3-** एल.एल.एम. विधिशास्त्र स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम निर्माण (हिन्दू विधिशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में) करने पर विचार।

**विद्यापरिषद् ने विचार-विमर्श के अनन्तर एल.एल.एम. विधिशास्त्र स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम निर्माण (हिन्दू विधिशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में) पर अपनी सैद्धान्तिक स्वीकृति प्रदान करते हुए विद्यापरिषद् ने पाठ्यक्रम निर्माण एवं अन्य प्रक्रिया सम्पादित करने के संदर्भ में समिति गठित करने हेतु कुलपति महोदय को अधिकृत किया।**

**कार्यक्रम संख्या -4-** हिन्दू अध्ययन (एम.ए.) स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम पर विचार।

विद्यापरिषद् के समक्ष दर्शन संकाय बोर्ड द्वारा संस्तुत हिन्दू अध्ययन पाठ्यक्रम आचार्य (एम.ए.) का अधोलिखित पाठ्यक्रम विचारार्थ प्रस्तुत किया गया-

FIRST SEMESTER

COURSE II – METHODS I : प्रमाण–विज्ञान

(अनिवार्य)

पूर्णांक : 100 (80+20)

4) शब्द, शब्दशक्ति, (अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना) शक्तिग्रह तथा तात्पर्य—ज्ञान तथा इनका पाश्चात्य विश्लेषण से वैषम्य।

**इकाई—4** : अर्थापत्ति,अनुपलब्धि एवं सम्भव, ऐतिह्य, चेष्टादि — अंक—15

**इकाई—5** : — अंक—20

1. आधुनिक विज्ञान तथा विधि शास्त्र में विभिन्न प्रमाणों का प्रयोग—
   - प्रत्यक्ष — प्रायोगिक विश्लेषण।
   - अनुमान — (यदि अ=ब तथा ब=स तब अ=स, सामान्यतः गणित तथा आधुनिक विज्ञान में प्रयुक्त)।
   - उपमान — तुलनात्मकता तथा सादृश्य (गणितीय प्रतिमान / सादृश्य / वर्गीकरण)।
   - अर्थापत्ति — परिस्थितिजन्य प्रमाण (विधिशास्त्र में अधिकतर प्रयुक्त)।
   - शब्द — आप्तोपदेश
   - अनुपलब्धि — अभाव का ज्ञान।
2. प्रमाण सिद्धान्त का प्रयोग—
   अ) आधुनिक विज्ञानों में जैसे आयुर्वेद, विधिशास्त्र (न्यायिक प्रक्रिया) तथा अर्थशास्त्र।
   ब) तत्त्वज्ञान में।
3. प्रमाणों की परम्परा पुष्टता (प्रमाण सम्प्लववाद) तथा विमर्श की आवश्यकता।
4. समकालीन सन्दर्भ के अध्ययन में इनका अनुप्रयोग।

**आन्तरिकमूल्यांकन** — अंक—20

**संस्तुत पाठ्यसामग्री—**


1. न्यायभाष्यम् — प्रसन्नपदा टीका सहित , सम्पा. [illegible] — चौखम्बा प्रकाशन— वाराणसी
2. सच्चिदानन्द मिश्र, न्यायदर्शन में अनुमान, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी, 2005।
3. [illegible], न्यायदर्शन, भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, [illegible] सच्चिदानन्द मिश्र, 2016।
4. S.S. Barlingay, *A Modern Introduction to Indian Logic*, National Publishing House, 1965.
5. D.C. Guha, *Navya Nyāya System of Logic*, Motilal Banarsidass, 1979
6. Nandita Bandyopadhyay, *The Concept of Logical Fallacies*, Sanskrit Pustak Bhandar, 1977
7. Ratna Dutta Sharma, *Philosophical Discourse*, Allied Publishers Pvt. Ltd, 2000.
8. Srilekha Datta, *'Validity is Not Enough'* in P.K. Sen (ed.): *Logical Identity and Consistency*, Allied Publishers Limited, 1998
9. Chattopadhyay, Madhumita, *Walking along the Path of Buddhist Epistemology*, DK Printworld, 2007.
10. Kaṇāda, *Vaiśeṣika Darśanam*- with *Praśastabhāṣya* (in Bengali) — ed. by Damodarasram, Kolkata, 2010.
11. Keshava Mishra, *Tarkabhāṣā*: ed. by Gangadhar Kar, part-1, Jadavpur University, Kolkata, 2008.
12. Narayana Bhatta, *Mānameyodaya*, Calcutta Sanskrit College Research Series No. CXXXVIII, Texts No.43, 1990.
13. Debabrata Sen, *The Concepts of Knowledge*, K. P. Bagchi, Calcutta, 1984.
14. K. N. Jayatilleke, *Early Buddhist Theory of Knowledge*, Routledge Pub, London, 1963.
15. Swami Satprakasanonda, Huston Smith: *Methods of Knowledge*, Advaita Ashram, London, 1995.
16. D. M. Datta: *The Six Ways of Knowing*, University of Calcutta, Calcutta, 1998.
17. Satischandra Chatterjee: *The Nyāya Theory of Knowledge*, Bharatiya Kala Prakashan, 2008.
18. Govardhan P. Bhatt : *Epistemology of the Bhaṭṭa School of Pūrva Mīmāṁsā*, Chaukhamba Sanskrit Series, Varanasi, 1962.
19. P. K. Mukhopadhyay : *Nyāya Theory of Linguistic Performance* ,Jadavpur University and K. P. Bagchi & Co., Kolkata, 1992.
20. B. K. Matilal, *Perception: An Essay On Classical Indian Theories Of Knowledge*, Oxford University Press, USA, 1986.
21. Srinivasa Rao : *Perceptual Error: The Indian Theories*, University Press of Hawai'i, Honolulu, 1998.
22. Śālikanatha Mishra, *Prakaraṇapañcikā- Nyayasiddhi*, A. Subrahmanya Śāstrī (ed.), Banaras Hindu University, Varanasi, 1961
23. Jyogendra Nath Bagchi, *Prāchīna Nyāya and Mīmāṁsā Darśana Sammata Prāmāṇyavāda*, Sanskrit Pustaka Bhandar.


*******

**COURSE III – METHODS II : वादपरम्परा तथा उनकी संस्थाएं: विकास और ज्ञान का महत्त्व** (अनिवार्य)

पूर्णांक : 100 (80+20)

**इकाई—1** — अंक—15

1. वादपरम्परा : शास्त्रार्थ की विधि—
   अ) सम्भाषा करने की विधि, नियमन, अनुशीलन और उपादेयता।
   ब) सिद्धान्त (सर्वतन्त्र— प्रतितन्त्र—अभ्युपगम—अधिकरण सिद्धान्त)
2. कथा (स्वरूप तथा प्रकार)—
   अ) वाद (स्वरूप तथा उद्देश्य)
   ब) जल्प (स्वरूप तथा उद्देश्य)
   स) वितण्डा (स्वरूप तथा उद्देश्य)

**इकाई—2** — अंक—15

1. ज्ञान परम्परा का संरक्षण—
   अ) सूत्र (सिद्धान्तों की सूत्रात्मक प्रस्तुति), भाष्य (सिद्धान्त का विवरण), वार्तिक (निर्दिष्ट तथा अनिर्दिष्ट स्थितियों की समीक्षा)।
   ब) वृत्ति (सिद्धान्त का संक्षिप्त विवरण)।
   स) टीका (सरलविधि में उदाहरण सहित विस्तृत विवरण)।
   द) टिप्पणी (किसी निश्चित बिन्दु, परिभाषा, शब्दावली, पादटिप्पणी के रूप में)
2. पदैकवाक्य एवं वाक्यैकवाक्यता।
3. अर्थनिर्धारण की प्रविधियाँ (श्रुति, लिङ्ग, वाक्य, प्रकरण, स्थान, समाख्या)

**इकाई—3** ज्ञान के तात्पर्यविश्लेषण के नियम षड्विधप्रक्रिया— षड्विधतात्पर्यनिर्णायक लिङ्ग।

**इकाई—4** — अंक—15

1. तन्त्रयुक्ति : अन्वेषण विधि, आधुनिक विज्ञान, तकनीकी औषधि, विधिशास्त्र, विशेष क्षेत्र में निर्णयन के विभिन्न स्तर तथा किसी समकालीन समस्या के समाधान में इनका अनुप्रयोग।
2. नैयायिकप्रक्रिया (समस्या से निर्णय)।

**इकाई—5** : वेदोच्चारण तथा अर्थ संरक्षण के माध्यम— — अंक—15

1. वेदाङ्ग।
2. पाठ—पद्धति(संहिता पाठ—पुष्पसूत्र के अनुसार, हिरण्यकेशीसूत्र,सामगानसूत्र—उच्चारण / अर्थविकृतिपाठ।

**आन्तरिकमूल्यांकन** — अंक—20

**संस्तुत पाठ्यसामग्री—**


1. [illegible], [illegible] त्रिपाठी, प्रकाशक— [illegible], भारतीय [illegible], काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी [illegible], 2006।
2. 'वादपरम्परा ज्ञानसंरक्षणं', ([illegible])— [illegible] शर्मा (सं.) सम्पादक — [illegible] मिश्र, सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, वेरावल, गुजरात, 2020।
3. सच्चिदानन्द मिश्र, [illegible] : [illegible] का महत्त्वपूर्ण घटक, दर्शन के आयाम, [illegible]—1, [illegible] बुक कार्पोरेशन, 2011.
4. [illegible] ([illegible]), [illegible], [illegible] संस्कृत सीरीज, वाराणसी, 2016.
5. [illegible] में [illegible], [illegible] त्रिपाठी, [illegible] प्रकाशन, 2020।
6. *Kārikāvalī-arthaddāraṇa*: Hindi vyākhyopetam by Vācaspati Gairolā, Caukhambā Vidyābhavana, Vārāṇasī, 1962.
7. Radhavallabh Tripathi, *Vāda in Theory and Practice: Studies in debates, dialogues, and discussions in Indian intellectual discourses*, IIAS, Shimla and DK Print World, New Delhi, 2016.
8. Kamalesh Datta Tripathi, *The Structure of the Śāstra and The Tradition of Exegesis: An Overview of The Indian Exegesis*.
9. K. N. Chatterjee, *Word and its Meaning- A New Perspective*, Varanasi, 1980.
10. P. K. Mazumdar, *The Philosophy of Language: An Indian Approach*, Calcutta, 1976.
11. S.S. Barlingay : *A Modern Introduction to Indian Logic*, National Publisher House, Delhi, 1965.
12. S.S. Barlingay: 'Problem of Formalisation in Samvāda Śāstra', JICPR, 1996.
13. S.S. Barlingay: 'Standards of Scientific Investigation: Logic and Methodology of Science in Caraka Saṁhitā, UHS, 19(3), 1984.
14. [illegible]

**COURSE IV - PRINCIPLES I : तत्त्वविमर्श** (अनिवार्य)

पूर्णांक : 100 (80+20)

**इकाई—1 हिन्दुत्व का मूल एवं क्रमिक इतिहास** अंक—16

1. 'हिन्दू' : वंशावली, भौगोलिक सम्प्रदाय।
2. 'हिन्दू' : भारतीय मनीषियों तथा विदेशी विद्वानों के मतों का परीक्षण
3. भारतीय ज्ञान परम्परा (अष्टादशविद्या) और इनके आचार्य।
4. भारतीय परम्परा में पदार्थ तत्त्व, (जगत एवं विश्व) की प्रकृति एवं पंचमहाभूतों का स्वरूप।

**इकाई—2** अंक—16

1. सम्पूर्ण परम्परा में आत्मा एवं आत्मतत्त्व की अवधारणा विषयक समानता।
2. सम्प्रभुता का समानांतर सिद्धान्त (आत्मानुशीलन)—
   अ) आत्मपरिचय : नासदीयसूक्त, ऐतरेयोपनिषद्, [illegible]।
   ब) अर्धनारीश्वर काश्मीर शैव—दर्शन एवं बृहदारण्यक उपनिषद् (1.4.3)

**इकाई—3** अंक—16

1. शक्ति और प्रकृति का सिद्धान्त : स्त्री तथा देवियों के परिप्रेक्ष्य में।
2. सौन्दर्यलहरी : सामान्य अध्ययन।
3. जैन एवं बौद्ध तथा सिक्ख परम्पराओं में स्त्री सिद्धान्त विषयक समानता।

**इकाई—4 :** अंक—16

1. अ) वैदिक परम्परा में एकत्व का सिद्धान्त, विरुद्ध मतों की स्वीकार्यता का आधार।
   ब) जैन, बौद्ध, न्याय, वैशेषिक एवं सिक्ख, सिद्धान्तों में अन्तःसंयोजनात्मकता।
2. अनन्त ज्ञान और विनम्रता का उदय : (नासदीय सूक्त, [illegible] श्री म.भा 8/3 जैन, बौद्ध एवं सिक्ख ग्रन्थों के सन्दर्भ में)।
3. सम्प्रदायों में एकत्व : एक सत्ता के अनेक अभिधान (जैसे— विष्णु, बुद्ध, सूर्य एवं शिव)।
4. अन्तःसंयोजनात्मकता, एकत्व, अन्योन्याश्रितता, स्वीकार्यता में अन्तःसम्बन्ध।
5. तर्कों की स्वीकार्यता : असहिष्णुता, हिंसा एवं आतंकवाद का निषेध (वैदिक मत, जैन (जिनदत्त सूरि) तथा सिक्ख मत।

**इकाई—5 : वैदिक दृष्टि** अंक—16

1. वर्ण की सात्त्विक स्थिति : पुरुषसूक्त, बृहदारण्यक उपनिषद् एवं मनीषापञ्चक(शंकराचार्य)।
2. सामाजिक समानता तथा सम्मान का आधार : एकत्व का सिद्धान्त।
3. वर्ण, जाति एवं कलह पूर्ण रूप से विभिन्न विचारों से सम्बद्ध कैसे? (श्रीमद्भगवद्गीता)

**आन्तरिकमूल्यांकन** अंक—20

**संस्तुत पाठ्यसामग्री—**


1. पुरुषसूक्त, ऋग्वेद 10 मण्डल, 90वाँ सूक्त श्रीपाद दामोदर सातवलेकर पारडी।
2. नासदीयसूक्त, ऋग्वेद 10 मण्डल, 129वाँ सूक्त, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, पारडी।
3. वाक्सूक्त ऋग्वेद 10 मण्डल, 125वाँ सूक्त, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, पारडी।
4. ईशादिदशोपनिषद्, [illegible] (ईश—केन—कठ—प्रश्न—मुण्डक—माण्डूक्य... शांकरभाष्य सहित), चौखम्भा प्रकाशन, 2010।
5. वैदिकसूक्तसंग्रह, गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण।
6. सौन्दर्यलहरी, [illegible]।
7. शांकरज्योति ([illegible]), [illegible], पराशरी प्रकाशन, काशी, वाराणसी, 2004।
8. [illegible], आदिशंकराचार्य, [illegible], 2020
9. बृहदारण्यक उपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण, 1915.
10. पुरुषार्थचतुष्टय, [illegible] त्रिपाठी, चौखम्बा [illegible], नई दिल्ली।
11. भारतीय चिन्तनधारा (भाग 1 एवं 2), भारतीय विद्या भवन, सं.— [illegible], नई दिल्ली, 2016।
12. संस्कृत वाङ्मय में विज्ञान का इतिहास, सं.— [illegible] मिश्र, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 2003।
13. प्राचीन भारतीय आचार्य, सम्पादक— [illegible], नई दिल्ली, 2016।
14. भारत की [illegible] और सामाजिक समरसता, [illegible], मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2010।
15. दुर्गासप्तशती, गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण, 2017।
16. केनोपनिषद्, ईशादि नौ उपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपुर, 2017।
17. *The Concept of Ātman in the Principal Upaniṣads: In the Perspective of the Saṁhitās, the Brāhmaṇas, the Āraṇyakas and Indian Philosophical System*, Baldev Raj Sharma, Dinesh Publications, Jalandhar-144008, 1972.
18. जिनसेन–महापुराण
19. *Facets of Indian Heritage*, Ed. Dipti Sharma Tripathi, New Bharatiya Book Corporation, Delhi, 2008.
20. *The Tantras and Their Impact on Indian Life*, Ed. Pushpendra Kumar, Vidyanidhi Prakashan, Delhi, 2004.
21. *Relevance of India's Ancient Thinking to contemporary Strategic Reality*, Ed. Arvind Gupta & Arpita Mitra, Vivekanand International Foundation & Aryan Books International, New Delhi, 2020.
22. *Maitryupanisad*, S. Radhakrishnan, The Principal Upanisads, Harper Collins Publishers, Noida, 2016.
23. *Taittiriyopanisad*, S. Radhakrishnan, The Principal Upanisads, Harper Collins Publishers, Noida, 2016.
24. *Subala Upanisad*, S. Radhakrishnan, The Principal Upanisads, Harper Collins Publishers, Noida, 2016.
25. *Sāmkhya Kārikā*, Ed. & Tr. Ramāśankara Tripathi, Chaukhaba Krishnadas Academy, Varanasi, 2015.
26. *Tarkabhāṣā- Yaśovijaya*, Ed. Dayānanda Bhārgava, Motilal Banarasidas, 1973.
27. *Vaiśeṣika Gaṇitīya Paddhati*, N.G. Dongre, Varanasi, S.S.V., 1965.
28. *Vedāntaparibhāṣā* (viṣaya paricchedah), Dharmarajadhvarindra, ed. by Panchanan Shastri, śak 1883.
29. *Sankhyatattvakaumudi*, Vacaspati Misra, ed. by Narayan Chandra Goswami, 1921.
30. *Classical Indian Metaphysics*, Stephen H. Philips, Delhi: Motilal Banarasidass, 1997.
31. *Indian Realism*, Jadunath Sinha, London: Kegan Paul, 1938.
32. *Indian Realism*, P.K. Mukhopadhyaya, Calcutta: K.P. Bagchi 1984.
33. *Vaiśeṣika Philosophy*, H. Ui, Varanasi: Chowkhambha Sanskrit Series 22, reprinted in 1962
34. *Tarkabhāṣā Vol– II*, Gangadhar Kar, Kolkata: Mahabodhi Books, 2014 Gopinath Bhattacharya, *Essays in Analytic Philosophy.*
35. *Nyāya Tattva Parikramā*, K. K. Banerjee.
36. *Facets of Indian Thought*, Betty Heimann, George Allen & Unwin Ltd, London, 1964.


*******

9.11.21

09.11.2021

# SECOND SEMESTER

**COURSE V – METHODS III : विमर्श की पाश्चात्य प्रविधि**

(अनिवार्य)
पूर्णांक : 100 (80+20)
अंक—16

**इकाई—1**

1. इतिहासान्वेषण की सीमा हेतु पारम्परिक पाश्चात्य प्रतिबन्ध।
2. पारम्परिक प्रविधियाँ (ऐतिहासिक जीवनियाँ इत्यादि)।
3. रीतिवाद एवं नव—समीक्षावाद : रीति एवं साहित्यात्मकता के महत्व, न कि लेखक का।

अंक—16

**इकाई—2**

1. मार्क्सवाद एवं समीक्षावादी चिन्तन—
   क) विश्लेषणात्मक उपागमों के रूप में वर्ग एवं आर्थिक—सिद्धान्तों की भूमिका।
   ख) समीक्षावादी सिद्धान्त— एक रचनात्मक सिद्धान्त : इसके इतिहास का पुनरावलोकन एवं यूरोप में उन्नत मार्क्सवादी चिन्तन के अभियान।
   ग) अन्तोनियो ग्राम्शी और आधिपत्य।

**इकाई—3**

1. संरचनावाद—
   क) सौस्यूर, क्लाउड लेवी स्ट्रास संरचना भाषा—विज्ञान का प्रभाव, परिवर्तनात्मक टिप्पणी (शब्दों के अन्तर्निहितार्थ नहीं होते)।
   ख) वस्तुनिष्ठता पर बल, वैज्ञानिक दृष्टिकोण।
2. उत्तर—संरचनावाद—
   क) देरिदा एवं औपनिवेशिक समीक्षावाद के प्रभाव।
   ख) विखण्डन— सन्दर्भ—हानि एवं अर्थ का अन्तहीन स्थगनादिक, समीक्षक का अर्थ रचना स्वातन्त्र्य।

अंक—16

**इकाई—4**

1. ऐतिहासिकतावाद, नव ऐतिहासिकतावाद कल्चरल मैटीरियलिज्म—
   क) तटस्थ अन्वेषण की असम्भावना एवं ऐतिहासिक मूल्यपरक निर्णयों के निर्माण की आवश्यकता।
   ख) महान् एवं लोकप्रिय शक्तियों के बीच अभेद : शक्ति—प्रयोग एवं अवसान।
   ग) गैर—मानक व्यवहारों में प्रकट अभिव्यक्ति : सूचक विरोध, कार्य—नीति, परम्परावादिता, तथा 'अन्य'।
2. नृजातीय अध्ययन, प्राच्यवाद, उत्तर—आधुनिकतावाद, उत्तर—औपनिवेशिक आलोचना और लैंगिक अध्ययन तथा फेनोमेनोलॉजी।

अंक—16

**इकाई—5**

1. मनोवैज्ञानिक विश्लेषण (फ्रायडीय एवं युंगीय एवं लाकानियन)।
2. विज्ञान एवं संज्ञान के बीच में दैवकालीय दृष्टि।
3. अपचयन के परे जाना : भारतीय ज्ञान—तंत्र की भूमिका।
4. भारतीय प्रविधियों उपयोग कर समकालीन पाठों का विश्लेषण (यथा प्रविधि— I एवं II पाठ्यक्रमों में निरूपित, उपयुक्त पाश्चात्य दृष्टिकोण)।

अंक—20

**आन्तरिकमूल्यांकन**

**संस्तुत पाठ्यसामग्री—**


1. मार्क्सवाद और भाषादर्शन, हरिवंशनन्दनसरस्वती [illegible], गीताप्रेस, गोरखपुर।
2. *Colonial Discourse and Post-Colonial Theory: A Reader*, Williams, Patrick and Laura Chrisman, Columbia Press, NY, 1993.
3. *History and Historians in the 19th Century*, GP Gooch, Forgotten Books, London, 2018.
4. *The Historian Craft*, Marc Bloch, Vintage, NY, 1964
5. *The Creation of Patriarchy*, Lerner Gerda, Oxford University Press, 1986.
6. *Gender and Politics of History*, Joan Scott, Oxford University Press, 1988.
7. *White Mythologies, History and the West*, Robert Young, Routledge, 1990.
8. *Studying History*, Black Jeremy, and Donald Macraild, Macmillan, 1997.
9. *G Research Methodology and Historical Investigation*, Clark Kitson, Cambridge University Press, 1972.
10. *The Age of Revolution*, 1789-1848, Eric Hobsbawm, Weidenfeld and Nicolson, World Publishing Company, London, 1962
11. *Essays in Indian History: towards a Marxist Perception*, Irfan Habib, Anthem Press, London, 2002.
12. *Marxist Historiographies: A Global Perspective*, Editors – Wang and Iggers, Routledge, London, 2016.
13. *Marxist History Writing for the 21st Century*, Edt. Chris Wickham, OUP/British Academy, London, 2007.
14. *Marxism and the Methodologies of History*, Gregor McLennan, Verso Books, London, 1981.
15. *Reflections on the Marxist Theory of History*, Paul Blackledge, Manchester University Press, Manchester, UK, 2006.
16. *Postmodernism, or, the Cultural Logic of Late Capitalism*, Fredric Jameson, Duke University Press, NC, USA, 1989.
17. *Postmodernism: A Very Short Introduction*, Christopher Butler, Oxford: Illustrated edition, Oxford University, London, 2008.
18. *Postmodern Theory*: Steven Best & Douglas Kellener, Guilford Publication, NY, 1992.
19. *The Origins of Postmodernity*, Perry Anderson, AAkar Books, Delhi, 2013.
20. *Orientalism*, Edward Said, Vintage, NY, 1978.
21. *Culture and Imperialism*, Edward Said, Publisher, Chatto & Windus, 1993.
22. *Orientalism: History, Theory and the Arts*; John McKenzie, Chatto and Windus, UK, 1995.
23. *Interrogating Orientalism: Contextual Approaches and Pedagogical Practices*, Editors: Hoeveler and & Cass, Ohio State University Press, USA, 2013.
24. *Orientalism and Modernism: The legacy of China in Pound and Williams*, Zhaoming Qian, Duke University Press, NC, 1993.
25. *Structuralism and Poststructuralism for Beginners*, Donald D. Palmer, For Beginners Press, 2007.
26. *Poststructuralism(A very Short Introduction)*, Catherine Belsey, Oxford: Illustrated edition, Oxford University, London, 2006.
27. *Michel Foucault: Beyond Structuralism and Hermeneutics*; Dreyfus and Rabinow, University of Schicago Press, 1983.
28. *Structuralism and Since: From Levi Strauss to Derrida*; Editor: John Sturrock, Oxford University Press, 1981.
29. *Genealogies and Speculation: Materialism and Subjectivity since Structuralism*, Suhail Malik and Armen Avanessian, Bloomsbury Academic, UK, 2016.
30. *Architecture and Structuralism: The Ordering of Space*, Hertzberger, NAi Publishers, Netherlands, 2014.
31. *History of Structuralism*, Vol. 1: *The Rising Sign*; 1945-1966, Dosse, University of Minnesota Press, USA, 1998.
32. *Critical Theory to Structuralism; Philosophy, Politics and the Human Sciences*, David Ingram, Routledge, London, UK, 2014.
33. *Philosophy: Structuralism for Unity, Visions of Truth for Justice and Success*, Ronnie Lee, Outskirts Press, USA, 2011.
34. *Toward a Philosophy of the Act*, M.M. Bakhtin, translation & notes by Vadim Liapunov, University of Texas Press, USA, 1993.
35. *The Dialogic Imagination : Four Essays*, edited by Michael Holquist, translated by Caryl Emerson & Michael Holquist, University of Texas Press, USA, 1982.


*******

**COURSE VI - PRINCIPLES II: धर्म एवं कर्म विमर्श**

(अनिवार्य)
पूर्णांक : 100 (80+20)
अंक—16

**इकाई—1**

1. धर्म— परिभाषाओं का सर्वेक्षण (श्रुति, स्मृति, पुराण, धर्मशास्त्र तथा सम्पूर्ण परम्परा में)—
   अ) उत्तरदायित्व तथा सीमा—भाव में सम्बन्ध।
   ब) प्रवृत्ति तथा निवृत्तिमूलक धर्म, अभ्युदय एवं निःश्रेयस (पुरुषार्थ) की सिद्धि हेतु।

अंक—16

**इकाई—2 मूलग्रन्थ** — परम्परा में सभी स्तरों पर धर्म एक संगठनात्मक सिद्धान्त—

1. वैदिक, जैन, बौद्ध एवं सिक्ख परम्परा में धर्म को चुनने की स्वतंत्रता।
   अ) व्यक्तिगत (आश्रम धर्म) और वर्णाश्रम धर्म : आचार, व्यवहार, प्रायश्चित एवं सम्बन्धित विधिविधान।
   ब) समाज और समुदाय : आचार, व्यवहार।
   स) राज्य तथा राजा का दायित्व : राजधर्म।
   द) ब्रह्माण्ड और ऋत की अवधारणा।

**इकाई–3** अंक–16

1. विश्वास और उपासना पर धर्म की प्रधानता–
   अ) चार्वाक वैष्णव (वैष्णव जन तो...), शैव, सिक्ख (देहु शिवा वर मोहे इहै...), बौद्ध (आष्टांगिक मार्ग) की परिभाषाएँ।
   ब) धर्म का आत्मनिष्ठात्मक स्वरूप, साक्षात्कार की शृंखलाओं पर आधारित : धर्म व्यवहारगत इकाई नहीं।
2. धर्म, रिलीजन, पन्थ, मज़हब एवं सम्प्रदाय पदों की व्याख्या।

**इकाई–4** अंक–16

1. कर्म : परिभाषाओं का सर्वेक्षण–
   अ) कर्म, विकर्म एवं अकर्म (भगवद्गीता)।
   ब) छः श्रेणियाँ : काम्य, नित्य, निषिद्ध, नैमित्तिक, प्रायश्चित्त एवं उपासना।
2. अ) व्यक्ति के लिए स्वधर्म कर्म का प्रावधान।
   ब) निष्काम कर्म : ब्रह्म या सर्वेश एक वास्तविक कर्ता के रूप में।
   विनयशीलता तथा कर्तव्यकर्म दायित्व मात्र के निर्वहण हेतु।

**इकाई–5** अंक–16

1. धर्म का संकल्पनात्मक, लौकिक कर्मकाण्ड पर पूर्वनियमन का अभाव, धर्मपालन की अपरिहार्यता।
2. धर्म और संस्कार (भागवतपुराण में राजा भरत के मृग बनने की कथा)।

**आन्तरिकमूल्यांकन** अंक–20

**संस्तुत पाठ्यसामग्री–**


1. धर्मशास्त्र का इतिहास, पी.वी. काणे, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, भाग–5, सन् 2016, पञ्चम संस्करण।
2. हिन्दू जीवन में सनातन की खोज, विद्यानिवास मिश्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2013।
3. उपनिषद् दर्शन का रचनात्मक सर्वेक्षण, रामचन्द्र दत्तात्रेय रानाडे, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1971।
4. जैन धर्म, पं. कैलाशचन्द्र जी सिद्धान्त शास्त्री (प्रथम संस्करण), भारती, मुजफ्फरनगर, 1998।
5. जैन दर्शन मनन और मीमांसा, आचार्य महाप्रज्ञ, जैनविश्वभारती, लाडनूँ (राजस्थान), आदर्श साहित्य संघ प्रकाशन, चूरू, राजस्थान, 2014।
6. श्रीमद्भगवद्गीता, शांकरभाष्य (हिन्दी अनुवाद सहित), गीताप्रेस, गोरखपुर, संवत् 2065।
7. कर्मयोगशास्त्र (Hindu Philosophy of Ethics), बाल गंगाधर तिलक, शक संवत् 2012, 1834।
8. सनातनधर्मोद्धार (धर्म–कर्म–आचारविचार)(खण्ड 1 से 4), जनार्दन द्विवेदी, लेख महामना मदन मोहन मालवीय, प्रकाशक, श्रीराधाकृष्णदास, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी प्रेस, वाराणसी, संवत् 1999।
9. *Sanatana Dharma: An Advance Text Book of Hindu Religion and Ethics*, Bhagwandas and Annie Besant, The Theosophical Publishing House, Madras, 1940.
10. *Dharma, the categorial imperative*, edited by: Ashok Vohra, Arvind Sharma, Mrinal Miri, D.K. Printworld, New delhi, 2005.
11. *Jain Dharma kā Maulika Itihāsa*, vols. I & II, Acharya Hastimala, Gaj Singh Rathore, Premraj Bupawat, Jaipur, Jaina Itihas Samiti, Lal Bhavan, Jaipur, 4th Ed., 1999.
12. *Bauddha Dharma Darśana*, Acharya, Narendradeva, Patna, Bihar Rashtrabhasha Parishad, 1956.
13. *Dharma and ethics : the Indian ideal of human perfection*: [revised version of papers presented at the National Seminar on Dharma, Virtue and Morality: the Indian Ideal of Human Perfection, held at Kanpur in 2005] by : D.C. Srivastava, Bijay H. Boruah, Decent Books, New Delhi, 2010.
14. *The Dharmasastra : an introductory analysis by Brajakishore Swain*, Akshaya Prakashan, Delhi, 2004.
15. *Social & Political implications of Concepts of Justice and Dharma*, Chousalkar Ashok S., Mittal Publications, Delhi, 1986.
16. *The Hindu vision*, Anantanand Rambachan, Motilal Banarsidass, Delhi, 1999.
17. *Dharma in early Brahmanic, Buddhist and Jain traditions*, Vincent Sekhar, Sri Satguru Publication, Delhi, 2003.
18. *The development and place of Bhakti in Sankara Vedānta*, Adyā Prasād Mishra, Munshiram Manoharlal, Delhi, 1967.
19. *Indian religious thought*, by Sarvepalli Radhakrishnan, Delhi : Orient, 2005.
20. *Hindu View of Life*, Sarvepalli Radhakrishnan, New Delhi: HarperCollins, 2012.
21. [illegible] — [illegible]


*******

## COURSE VII - PRINCIPLES IVA : वैदिक परम्परा के सिद्धान्त

(वैकल्पिक)
पूर्णांक : 100 (80+20)

**इकाई–1 : वैदिक परम्परा एवं उसके आधारभूत तत्त्व–** अंक–16

1. वेद : अर्थ एवं व्युत्पत्ति, पर्याय, विभिन्न परम्पराएँ।
2. वेद, वेदत्रयी, आम्नाय, निगम, स्वाध्याय आदि का एकत्व।
3. ऋषि, देवता एवं छन्द का स्वरूप।
4. वैदिक संहिताओं एवं शाखाओं का उद्भव एवं विकास।
5. वेद, ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषदों का एकशरीरत्व अथवा एकात्मता।
6. निगमागम का अन्तःसम्बन्ध।

**इकाई–2 : यज्ञ एवं इष्टियाँ–** अंक–16

1. काम्य एवं निष्काम यज्ञ।
2. यज्ञ की व्यापकता एवं प्रायोगिक विज्ञान।
3. अग्निहोत्र, सन्ध्योपासना एवं शुचि–विवेक।
4. अग्निशाला, पंचाग्नि विवरण एवं यज्ञशाला का विज्ञान।
5. व्रत, सत्य, दीक्षा, तप एवं यज्ञ की परम्परा।
6. शुभ एवं अशुभ की अवधारणाएँ (पाप–पुण्य, ऋत–अनृत, स्वर्ग–नरक आदि)।
7. विनियोग का स्वरूप– ऋषि, देवता, छन्द एवं उनका विनियोग।

**इकाई–3 : यज्ञमीमांसा–** अंक–16

1. मीमांसाशास्त्र का संक्षिप्त परिचय।
2. वैदिक यज्ञों का परिणाम (अपूर्व आदि)।
3. देवतत्त्व की अवधारणा–

**इकाई–4 : वेद व्याख्या की प्रमुख परम्पराएँ–** अंक–16

1. वेद की सार्वजनीन एवं सार्वभौमिक उपादेयता–
   अ) व्यक्तित्व निर्माण के सन्दर्भ में।
   ब) समरस समाज के निर्माण के सन्दर्भ में।
   स) राष्ट्र निर्माण के सन्दर्भ में।

**इकाई–5 :** अंक–16

1. वैदिक निर्वचन– याज्ञिक तथा आध्यात्मिक।
2. वैदिक पर्यावरण विज्ञान।

**आन्तरिकमूल्यांकन** अंक–20

**संस्तुत पाठ्यसामग्री–**


1. वैदिक संहिताएँ– *ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद*।
2. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
3. ऋग्वेदभाष्यभूमिका, आचार्य सायण।
4. अर्थसंग्रह, लौगाक्षिभास्कर।
5. श्रौतसूत्र, सी.जी. काशीकर, पूना 1964।
6. ईश्वरसंहिता– भाग 1 (प्रस्तावना), संपादकीय श्री ... एवं राधा वल्लभ त्रिपाठी, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र।
7. मीमांसा कोश, केवलानन्द सरस्वती, 1952।
8. [illegible], पूना 1965।
9. वैदिक देवताओं का उद्भव एवं विकास, गया चरण त्रिपाठी, नई दिल्ली, 2014।
10. वैदिक देवता दर्शन, प्रभु दयाल अग्निहोत्री, नई दिल्ली, 1980।
11. वेदपरिचय, वासुदेव शरण अग्रवाल, वाराणसी, 1964।
12. श्रौत कोश (तीन भागों में), सी.जी. काशीकर, पूना, 1958।
13. धर्मशास्त्र का इतिहास (प्रथम भाग), पी.वी. काणे, पूना।
14. संस्कृत साहित्य का इतिहास (भाग प्रथम–द्वितीय), संपादक, ब्रजबिहारी चौबे एवं ओमप्रकाश पाण्डेय, लखनऊ, 1996।
15. यज्ञतत्त्वप्रकाश, चिन्नस्वामी शास्त्री, डॉ. पट्टाभिराम शास्त्री, चौखम्बा ..., वाराणसी, 1983(?)।
16. वैदिक यज्ञों का सचित्र कोश, एस.जी. ..., इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, 2004।
17. [illegible], कपिलदेव द्विवेदी एवं श्यामलाल सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2010।
18. शतपथब्राह्मण (प्रथम भाग) भूमिका भाग, युगलकिशोर मिश्र, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।
19. वेद रहस्य, श्री अरविन्द, श्री अरविन्द आश्रम, पाण्डिचेरी, 2015।

20. Change and continuity in Indian Religion, J Gonda, London, 1965.
21. Dual Deities in the religion of the Veda, J Gonda, London, 1974.
22. Brihaddevata or index to the Gods of the Rgveda, Shaunak, Ed. Rajendra Lal Mitra, 1893.
23. Sacrifice in the Rgveda, Poddar K R, Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay, 1953.
24. The Vedic Etymology, Fateh Singh, Kota 1952.
25. Vedic Studies Vol. I, A. Venkat Subiah, Mysore, 1932.
26. Rgvedic Culture, A. C. Das, Cosmo Publications India, Calcutta, 2003.
27. Communication with God, G. C. Tripathi, New Delhi, 2005.
28. Vedic Religion, K. Chattopadhyaya, Dept. of Philosophy and Religion, BHU, Varanasi.


*******

**COURSE VII - PRINCIPLES IVB : जैन परम्परा के सिद्धान्त** (वैकल्पिक)

पूर्णांक : 100 (80+20)

**इकाई : 1 जैन तीर्थंकरों का इतिहास** अंक—16

(i) तीर्थंकर परम्परा।
(ii) ऋषभदेव।
(iii) पार्श्वनाथ।
(iv) महावीर।

**इकाई : 2 जैन तत्त्वमीमांसा** अंक—16

(i) द्रव्य तथा उसके स्वरूप
(ii) जीव।
(iii) अजीव। —ईश्वरवाद (सत्कार्यसिद्धि)
(iv) सम्यग्दर्शन।

**इकाई : 3 जैन ज्ञानमीमांसा** अंक—16

(i) सम्यक् ज्ञान।
(ii) प्रमाण ज्ञान।
(iii) परोक्ष प्रमाण। मति एवं श्रुतज्ञान।
(iv) प्रत्यक्ष प्रमाण।

**इकाई : 4 केवल ज्ञान (सर्वज्ञता)प्रमुख सिद्धान्त** अंक—16

(i) आस्रव, संवर।
(ii) निर्जरा, बन्ध, मोक्ष
(iii) अनेकान्तवाद
(iv) स्याद्वाद।
(v) नयवाद। अहिंसा

**इकाई : 5 जैन आचार मीमांसा** अंक—16

(i) जैनश्रावकाचार
(ii) जैनश्रमणाचार

आन्तरिकमूल्यांकन अंक—20

संस्तुत पाठ्यसामग्री—


1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]


*******

**COURSE VII - PRINCIPLES IVC : बौद्ध परम्परा के सिद्धान्त** (वैकल्पिक)

पूर्णांक : 100 (70+30)

**इकाई—1** अंक—16

बुद्ध की मौलिक शिक्षाएँ— चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग, मध्यम मार्ग, सत्ता के तीन लक्षण, ब्रह्म विहार, प्रतीत्यसमुत्पाद।

**इकाई—2** अंक—16

निर्वाण, क्षणभंगवाद, शील, समाधि और प्रज्ञा, पुनर्जन्म और कर्म सिद्धान्त विषयक आरम्भिक बौद्ध अवधारणाएँ।

**इकाई—3** अंक—16

बौद्ध—धर्म के सम्प्रदाय— सर्वास्तिवाद, वैभाषिक, सौत्रान्तिक,

**इकाई—4** अंक—16

माध्यमिक (शून्यवाद), योगाचार (विज्ञानवाद)।

**इकाई—5** अंक—16

अर्हत और बोधिसत्व के आदर्श स्वरूप का परिचय, पूर्णता का सिद्धान्त, त्रिकाय सिद्धान्त।

आन्तरिकमूल्यांकन अंक—20

संस्तुत पाठ्यसामग्री—


1. बौद्ध धर्म एवं दर्शन, आचार्य नरेन्द्र देव, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली, 1964।
2. *What the Buddha Taught*, Rahul Walpola, Reprint, London: 2007.
3. *Buddhist Thought in India*, Conze, E., Delhi: 1996.
4. Kalupahana, D.J., *Buddhist Philosophy: A Historical Analysis*, Hawaii: 1976.
5. Kalupahana, D.J., *The Principles of Buddhist Philosophy*, Delhi: 1992.
6. Murti, T.R.V., *The Central Philosophy of Buddhism*, London: 1975.
7. Murti, T.R.V., *Studies in Indian Thought*, Delhi: 1979.
8. Chatterjee, A.K., *The Yogācāra Idealism*, Delhi: 1975.
9. Stcherbatsky, Th., *Central Conception of Buddhism*, London: 1923.
10. Mookerjee, S., *Buddhist Philosophy of Universal Flux*, Calcutta: 1935.
11. Singh, Indra Narain, *Philosophy of Universal Flux in Theravāda Buddhism*, Vidyanidhi Prakashan, Delhi, 2002.


*******

**COURSE VIII- LANGUAGE IIA: वेदांग— शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त छंद** (वैकल्पिक)

पूर्णांक : 100 (80+20)

**इकाई—1 : शिक्षा —** अंक—16

1. शुक्लयजुर्वेद शिक्षा का स्वरूप।
2. शिक्षोक्त वर्णोच्चारण।
3. वेद की विभिन्न शाखाओं के अनुसार विभिन्न 'शिक्षा' ग्रन्थ।
4. शिक्षानुसार स्वरभक्ति का स्वरूप।
5. शिक्षा एवं प्रातिशाख्य का अन्तःसम्बन्ध।

**इकाई—2 : व्याकरण—** अंक—16

1. वेदाङ्गों में व्याकरण नामक वेदाङ्ग की मुख्यता।
2. व्याकरण शास्त्र का प्रयोजन।
3. व्याकरण शास्त्र की प्राचीन एवं नव्य परम्परा।
4. व्याकरण शास्त्र के अनुसार प्रकृति और प्रत्यय का विवेचन।
5. व्याकरण शास्त्र के द्वारा सुबन्त, तिङन्त, कारक एवं समास पदों का स्पष्टीकरण।

**इकाई—3 : निरुक्त—** अंक—16

1. निरुक्त शास्त्र का स्वरूप एवं प्रयोजन।
2. वेदार्थबोध में निरुक्त शास्त्र का योगदान।
3. निरुक्त के अनुसार शब्दनिर्वचन प्रकार।
4. निरुक्त के अनुसार मन्त्रों का त्रैविध्य।
5. निरुक्तानुसार देवतास्वरूप विचार।

इकाई—4 : छन्दःशास्त्र— अंक—16

1. गायत्र्यादि वैदिकछन्दों का स्वरूप।
2. अनुष्टुबादि लौकिकछन्दों का स्वरूप।
3. मात्रिक एवं वार्णिक छन्दों का विवेचन।
4. दैवीगायत्र्यादि वैदिकछन्दों का विभाजन।
5. लौकिकछन्दों में मगणादि गणों की उपादेयता।

इकाई—5 अंक—16

1. कल्प और ज्योतिष का स्वरूप
2. कल्प और ज्योतिष का प्रयोजन
3. कल्प एवं ज्योतिष के अवान्तर भेद
4. कल्प एवं ज्योतिष की सामाजिक प्रासंगिक उपादेयता

आन्तरिकमूल्यांकन अंक—20

संस्तुत पाठ्यसामग्री—


1. याज्ञवल्क्य शिक्षा, अमरनाथ शास्त्री, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, दिल्ली।
2. नारदीय शिक्षा, श्रीपीताम्बरपीठ, संस्कृत परिषद्, दतिया।
3. पाणिनीय शिक्षा, शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2013।
4. शिक्षासंग्रहसूत्रम्, कपिलदेव द्विवेदी, रामलाल सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2015।
5. ऋग्वेद प्रातिशाख्यम्, वीरेन्द्र कुमार वर्मा, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली।
6. अष्टाध्यायी, प्रथमा वृत्ति, ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, रामलालकपूर ट्रस्ट, सोनीपत, हरियाणा।
7. निरुक्त, यास्क, उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
8. व्यास शिक्षा।
9. शिक्षावल्ली, तैत्तिरीयोपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपुर।
10. छन्दोमञ्जरी, गंगादास, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2016।
11. वृत्तरत्नाकर, केदार भट्ट, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2016।
12. *Chandas and Vedāṅga*, Madhavi S. Narsalay, Tirumalai Tirupati Devasthanams, Tirupati, 2018.
13. *Origin and Development of Sanskrit Metrics*, Arati Mitra, The Asiatic Society.
14. *Pāṇinīya Śikṣā or the Śikṣā Vedāṅga ascribed to Pāṇini*, Manomohan Ghosh, University of Calcutta, 1938.
15. *Shikshasangrah of Yāgyavalkya and other*, Rama Prasad Tripathi, Sampoornanand Sanskrit University, Varanasi.
16. *Nighaṇṭu & Nirukta*, Lakshman Swarup, Motilal Banarsidas, Varanasi, 2015.
17. *Ṛgvedabhāṣyabhūmikā*, Ācārya Sāyaṇa.


*******

COURSE VIII : LANGUAGE 8B - पालि भाषा तथा साहित्य (वैकल्पिक)

पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई—1 : पालि व्याकरण— अंक—16

सन्धि, कारक, समास, काल, धातुगण, शब्दरूप।

इकाई—2 : थेरवाद बौद्ध धर्मदर्शन के पारिभाषिक शब्दों पर संक्षिप्त आलोचनात्मक [illegible], बुद्ध, दुक्ख, दुक्खसमुदय, दुक्खनिरोध, अनिच्चता, अनत्ता, मेत्ता, करुणा, उपेक्खा, अरहत्त, निब्बान। अंक—16

इकाई—3 : पटिच्चसमुप्पाद, पञ्चक्खन्ध, [illegible], सील, समाधि, पञ्ञा। अंक—16

इकाई—4 : पालि साहित्य का परिचय तथा इतिहास— अंक—16

तिपिटकों का सामान्य अध्ययन, तिपिटकोत्तरवर्ती साहित्य।
बुद्धवचनों का वर्गीकरण।
वंश साहित्य।

इकाई—5 : अनुवाद—पालि से अंग्रेजी/हिन्दी/संस्कृत अंक—16

आन्तरिकमूल्यांकन अंक—20

संस्तुत पाठ्यसामग्री—


1. Tiwary, L.N., & B. Sharma (ed), *Kaccāyana-vyākaraṇa*, Varanasi, 1961.





2. Geiger, W., *Pāli Literature and Language*, Eng. Trans. C. Ghosh, reprint, Calcutta, 1968.
3. Jagdish, B.J., *Pāli Mahāvyākaraṇa*, Shrāvastī, 1968.
4. Warder, A.K., *Introduction to Pāli*, London, 1974.
5. Warder, A.K., *Pāli Metre*, London, 1967.
6. Bālāvatāra (Ed.) Swami Dwarikadasa Shastri, Bauddha Bharati, Varanasi, 1975.
7. *Pāli Vyākaraṇa* (3rd Ed.) by Bhikshu Dharmarakshit, Jnana Mandala Pvt. Ltd, Varanasi, Samvat, 2028.
8. Buddhadatta, A.P., *The Higher Pāli Course*, Colombo, 1951.
9. Buddhadatta, A.P., *The New Pāli Course*, 2 parts, Colombo, 1946.
10. Law, B.C., *History of Pāli Literature*, 2 volumes, Kegan Paul Trubner & Co. Ltd., London, 1970.
11. Winternitz, M., *A History of Indian Literature*, 2 volumes, New Delhi, 1969.
12. Upadhyaya, B.S., *Pāli Sāhitya kā Itihāsa*, Hindi Sahitya Sammelana, Prayāgarāja, 2008.
13. Dalwis, James, *Introduction to Kachchāyana's Grammar of the Pāli Language*, Colombo, 1863.
14. Muller, E., *A Simplified Grammar of the Pāli Language*, Trubner & Co, London, 1884.
15. Kumar, Bimalendra, *Gandhavaṃsa (History of Pāli Literature)*, Eastern Book Linkers, Delhi, 1992.
16. Hazra, K. L., *Pāli Language and Literature* (2 vols.), New Delhi: D.K. Printworld(P)Ltd, 1998.


*******

COURSE VIII - LANGUAGE 8C : प्राकृत भाषा एवं साहित्य (वैकल्पिक)

पूर्णांक : 100 (80+20)

अंक—16

इकाई—1 : प्राकृत भाषा—

1. उत्पत्ति, परिभाषा एवं विकास।
2. प्रथमस्तरीय प्राकृत, मध्यस्तरीय प्राकृत, तृतीय स्तरीय प्राकृत एवं आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास में प्राकृत भाषा का योगदान।
3. वैदिक साहित्य में प्राकृत भाषा के तत्त्व। अंक—16

इकाई—2 : प्राकृत व्याकरण—

1. कारक, सन्धि, समास, क्रिया, तद्धित, कृदन्त।
2. रूपरचना : शब्दरूप एवं धातुरूप। अंक—16

इकाई—3 : अर्धमागधी आगम साहित्य—

1. अंग साहित्य, द्वादश अंग, उपांग साहित्य और द्वादश उपांग।
2. छेदसूत्र, मूलसूत्र, प्रकीर्णक और चूलिका। अंक—16

इकाई—4 : शौरसेनी आगम साहित्य—

1. शौरसेनी टीका साहित्य।
2. आचार्य कुन्दकुन्द की रचनाएँ। अंक—16

इकाई—5 : पवयणसारो (मूल अंश) अंक—20

आन्तरिकमूल्यांकन

संस्तुत पाठ्यसामग्री—


1. भाषा विज्ञान, भोलानाथ तिवारी, किताब महल प्रा० लि०, इलाहाबाद, 1961।
2. अभिनव प्राकृत व्याकरण, नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा पब्लिकेशन्स, कमच्छा, वाराणसी, 1963।
3. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा पब्लिकेशन्स, कमच्छा, वाराणसी, 1966।
4. प्रौढ़ प्राकृत अपभ्रंश रचना सौरभ भाग—2, कमल चन्द सोगाणी, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जैन विद्या संस्थान, जयपुर (राजस्थान), 2003।
5. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण, रिचर्ड पिशल, अनुवादक हेमचन्द्र जोशी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 1958।
6. प्राकृत वाक्य रचना बोध, आचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्वभारती, लाडनूं, राजस्थान 1991।
7. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, बेचर दास दोशी, पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी, 1966।
8. प्राकृत साहित्य का इतिहास, जगदीश चन्द्र जैन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1961।
9. शौरसेनी प्राकृत भाषा एवं साहित्य का इतिहास, इन्दु जैन, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, 2011।
10. कुन्दकुन्दभारती, कुन्दकुन्दाचार्य, श्रुत भण्डार व ग्रन्थ प्रकाशन समिति, फलटन, महाराष्ट्र, 1970।
11. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान, हीरालाल जैन, मध्य प्रदेश शासन साहित्य परिषद्, भोपाल, 1962।
12. जैन साहित्य का इतिहास, कैलाश चन्द्र शास्त्री, श्री गणेशप्रसाद वर्णी जैन ग्रन्थमाला, वाराणसी, 1963।
13. Introduction to Prakrit, A. C. Woolner, New Delhi, 1917.


*******

## THIRD SEMESTER

**COURSE IX - PRINCIPLES III : पुनर्जन्म–बन्धन–मोक्ष–विमर्श** (अनिवार्य)

पूर्णांक : 100 (80+20)

**इकाई–1** अंक–16

1. जीव की अवधारणा।
2. बंधन की परिभाषाएँ।
   बन्धन की कोटियाँ : प्राकृतिक, वैकृतिक और दाक्षिणक (सांख्यकारिका 44, सांख्यतत्त्वकौमुदी)।
3. बन्धन का मूल कारण (गीता 3.37–3.43) तथा बन्धन की प्रक्रिया (गीता 2.62–67): अज्ञान (वेदान्त), मिथ्याज्ञान (न्याय), मिथ्यादृष्टि (बौद्ध), अविवेक (सांख्य)।

**इकाई–2** अंक–16

1. पुनर्जन्म का सिद्धान्त–
   अ) धर्म अभ्यास का संबल।
   ब) विनाश–भय के निवारण से उत्पन्न उत्साह।
2. प्रक्रिया : प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धान्त (बौद्ध)।

**इकाई–3** अंक–16

1. औपनिषद् दृष्टि
2. दार्शनिक दृष्टि
3. आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि

**इकाई–4** अंक–16

1. मोक्ष का अर्थ एवं परिभाषाएँ।
2. मोक्ष– दुःख निवृत्ति–
   अ) परम (अनन्त असीम) आनन्द उपनिषद् की दृष्टि में।
   ब) जीवन्मुक्ति और विदेहमुक्ति (उदाहरण)।
   स) संन्यासी और गृहस्थ के लिए मोक्षविषयक पूर्वापेक्षाएँ।

**इकाई–5** अंक–16

1. मोक्ष मार्ग का निर्धारण–
   अ) विभिन्न योगमार्ग : अभ्यास, कर्म, भक्ति, ज्ञान।
   ब) भक्ति परम्परा एवं उसका योगदान।
2. आचार्यों की भूमिका।

**आन्तरिकमूल्यांकन** अंक–20

**संस्तुत पाठ्यसामग्री–**


1. ऋग्वेद संहिता, 10वाँ मण्डल, 129वाँ सूक्त, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर पारडी।
2. बृहदारण्यकोपनिषद्, द्वितीय (श्वेतकेतु), तृतीय तथा पञ्चम ब्राह्मण, गीताप्रेस संस्करण, 1916।
3. कठोपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपुर, प्रथम संस्करण, 1983।
4. मुण्डकोपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपुर, प्रथम संस्करण, 2019।
5. श्वेताश्वतरोपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपुर, तृतीय संस्करण, 1949।
6. कौषीतकि ब्राह्मणोपनिषद्।
7. श्रीमद्भगवद्गीता, गीताप्रेस, गोरखपुर।
8. [illegible] (भाषा–भाव–प्रकाशिकाव्याख्यासहित)(खण्ड 1 से 4), पशुपति द्विवेदी, प्रेरक महामना मदन मोहन मालवीय, प्रकाशक, श्रीरामकृष्णदास, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी प्रेस, वाराणसी, संवत् 1999।
9. ब्रह्मसूत्र, रामानुजाचार्य, स्वामी रामभद्राचार्य की श्रीराघवकृपाभाष्य टीका के साथ प्रकाशित, जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उत्तरप्रदेश, 2014।
10. भगवद्भक्तिरसायनम्, मधुसूदन सरस्वती, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
11. गीताव्याख्यानमाला, गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी, प्रकाशन विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, 2006।
12. मैत्र्युपनिषद्, डॉ. रामजी पाण्डेय, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, प्रथम संस्करण, 2001।
13. सांख्यतत्त्वकौमुदी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2012।
14. Indian Philosophy vol. 1, Judunath Sinha, New Central Book Agency, Calcutta, Second revised book, 1987.
15. *The development and place of Bhakti in Śāṅkara Vedānta*, Ādyā Prasād Mishra, Munshiram Manoharlal, Delhi, 1967.


*******

**COURSE X – PRACTICS I : रामायण** (अनिवार्य)

पूर्णांक : 100 (80+20)

**इकाई–1** अंक–16

1. रामायण इसका पाठ निर्धारण तथा विस्तार– भारत तथा विदेशों में–
   अ) रामकथा का वैदिक आधार।
   ब) पुराकथा की विश्वोत्पत्ति की पारम्परिक प्रथा, जो उसी रूप में महर्षि वाल्मीकि के रामायण में वर्णित।
   स) भारत से बाहर विकसित (श्रीराम–)अद्भुतकथा, जो महर्षि वाल्मीकि की मूल कथा से बहुत अधिक भिन्न है।

**इकाई–2** अंक–16

1. पारम्परिक रामायणों की लोकप्रियता तथा प्रासंगिकता।
2. रामायण एक उपजीव्य ग्रन्थ : भारतीय साहित्य एवं कला (लोककला, शास्त्रीय कला तथा समकालीन कला)।
3. अध्यात्म रामायण कम्बन, कृत्तिवास, बलराम, आनन्द, अद्भुत, तुलसी

**इकाई–3**

1. मर्यादापुरुषोत्तम राम।
2. रामायण में मानवीय तथा मानव–प्रकृति सम्बन्ध।

**इकाई–4** अंक–16

1. रामायण में ऋषियों की भूमिका : नायक निर्माता के रूप में।
2. रामायण में स्त्रीविमर्श : सीता, मन्दोदरी, तारा, अनुसूया, कैकेयी, उर्मिला के सन्दर्भ में।

**इकाई–5 : रामराज्य (राम–भरत संवाद– वाल्मीकि रामायण)।** अंक–16

**आन्तरिकमूल्यांकन** अंक–20

**संस्तुत पाठ्यसामग्री–**


1. श्रीमद्वाल्मीकि रामायण, हिन्दी अनुवाद सहित, गीता प्रेस, गोरखपुर, संस्करण 17, 2007।
2. श्रीमद्वाल्मीकि रामायण, (भाग 1–4), उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, न्यू हैदराबाद, लखनऊ, 1996
3. रामायण–महाभारत, काल, इतिहास, विद्वान्, जोधपुर, 'प्रकाशनार्थ' भारतीय ... नई दिल्ली।
4. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, तृतीय खण्ड(आर्षकाव्य) रामायण, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, न्यू हैदराबाद, लखनऊ।
5. इतिहास पुराण व वाल्मीकि ... ।
6. रामायणमीमांसा, धर्मसम्राट् स्वामी करपात्री जी, प्रकाशक ..., वृन्दावन, मथुरा, 2001।
7. रामकथा in India Abroad-Satyabrat Shastri


*******

**COURSE XI – DISCIPLINE IA : लोकवार्ता** (वैकल्पिक)

पूर्णांक : 100 (80+20)

**इकाई–1 : लोकवार्ता का अर्थ और अवधारणात्मक स्वरूप–** अंक–16

(अ) लोक की अवधारणा– वैदिक एवं पुराण साहित्य के सन्दर्भ में।
(ब) लोकोक्ति की अवधारणा–वैदिक–पुराण, संस्कृतादि वाङ्मय में।
(स) लोक की अवधारणा– संस्कृत पालि एवं प्राकृत वाङ्मय में।

**इकाई–2 :** अंक–16

(अ) लोकवार्ता– अर्थ, परम्परा एवं आधुनिक परिप्रेक्ष्य।
(ब) लोक और वेद, लोक और शास्त्र– अन्तःसम्बन्ध।

**इकाई–3 : भाषा और साहित्य–** अंक–16

(अ) लोकभाषाएँ, लोकसाहित्य– अर्थ एवं परम्परा।
(ब) जनजातीय वाचिक साहित्य।
(स) लोककथाएँ, लोकगीत– स्वरूप एवं विषय–वस्तु।

**इकाई–4 : लोकवार्ता, विश्वास तथा संस्कृति–** अंक–16

(अ) विश्वदृष्टि, देवी–देवता, पूजापद्धति एवं उपासना, व्रत, पर्व, त्यौहार, मेले और यात्राएँ।

(ब) लोकविश्वास, शकुन—अपशकुन विचार, भूत—प्रेत तथा जादू—टोना इत्यादि
(स) सामाजिक नियम, आचार—व्यवहार पद्धति

**इकाई—5 : ज्ञान—विज्ञान एवं कौशल—** अंक—16

(अ) प्रत्यक्ष प्रकृति दर्शन
(ब) पौराण विज्ञान, कृषि तथा देशज चिकित्सा।
(स) लोकाख्यान, लोक-वाद्य, धर्मगाथाएँ, लोककलाएँ, भूमि एवं भित्ति अलंकरण।

**आन्तरिकमूल्यांकन** अंक—20

**संस्तुत पाठ्यसामग्री—**


1. [illegible], निर्णय सागर प्रेस, मुम्बई, 1933।
2. भारतीय आदिवासी (उनकी संस्कृति और सामाजिक पृष्ठभूमि), ललित प्रसाद विद्यार्थी, हिन्दी समिति, [illegible] पुरुषोत्तमदास टण्डन मार्ग, हिन्दी भवन, लखनऊ, 1973।
3. [illegible], साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012।
4. लोक साहित्य विज्ञान, सत्येन्द्र, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा, द्वितीय संस्करण, 1971।
5. लोक साहित्य की भूमिका, कृष्णदेव उपाध्याय, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 2019।
6. लोक संस्कृति की रूपरेखा, कृष्णदेव उपाध्याय, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 2019।
7. [illegible], नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2017।
8. भारतीय प्रतीकों का लोक, [illegible], नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2017।
9. उत्तर प्रदेश की लोककला भूमि एवं भित्ति अलंकरण, [illegible], नई दिल्ली, प्रथमसंस्करण, 1997।
10. [illegible], नईदिल्ली, प्रथमसंस्करण, 2018।
11. लोक और शास्त्र अन्वय और समन्वय, [illegible], नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2018।
12. कला और संस्कृति, वासुदेव शरण अग्रवाल, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद, 1952।
13. जनपदीय अध्ययन की भूमिका, [illegible], भोजपुरी अध्ययन केन्द्र, का.हि.वि.वि., वाराणसी, 2017।
14. भाषा और संस्कृति, [illegible], नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1980।
15. लोकगीत संग्रह, रामनरेश त्रिपाठी।
16. लोकगीतों की सामाजिक व्याख्या, श्रीकृष्ण दास, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद, 1956।
17. हमारा ग्राम साहित्य, रामनरेश त्रिपाठी, हिन्दी मन्दिर, प्रयाग, 1940।
18. लोककला, सं. [illegible], भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर राजस्थान, 2002।
19. *Ancient Indian Folk Cults*, Vasudev Sharan Agrawal, Prithvi Prakashan, Varanasi, First Edition, 1970.


*******

## COURSE XI – DISCIPLINE IB : भारतीय नीतिशास्त्र

(वैकल्पिक)
पूर्णांक : 100 (80+20)

**इकाई—1 :** अंक—16

(1) आचारशास्त्र का इतिहास और स्वरूप। (मनु, याज्ञवल्क्य, महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता—17 अध्याय)

**इकाई—2 :** अंक—16

(1) नैतिक शिक्षाओं के विविध रूप— प्रभुसम्मित, सुहृत्सम्मित एवं कान्तासम्मित उपदेश।
(2) सनातन धर्म के आधारभूत नैतिक सिद्धान्त : (स्वामीविवेकानन्द, अरविन्दो, दयानन्द, गांधी, मालवीयादि)

**इकाई—3 :** अंक—16

(1) नीति ज्ञान के स्रोत तथा साधन।
(2) नैतिक चेतना का विकास : मानवीय मूल्य का आधार और आत्मनियन्त्रित मूल्य (प्रायश्चित्त विधान)।
(3) मौलिक नैतिक सम्प्रत्यय: शुभ तथा अशुभ, न्याय तथा अन्याय, पुण्य तथा पाप, अधिकार तथा कर्तव्य।
(4) नैतिक निर्णय (दैवी तथा आसुरी, सम्पद्— श्रीमद्भगवद्गीता)।

**इकाई—4 :** अंक—16

(1) ऋण की अवधारणा।
(2) कर्मस्वातन्त्र्य, संकल्पस्वातन्त्र्य का सिद्धान्त, नर्तव्यवाद (श्रीमद्भगवद्गीता)।
(3) पुरुषार्थचतुष्टय (महाभारत)।

**इकाई—5 :** अंक—16

(1) अनुप्रयोगात्मक आचार पद्धतियों के महत्त्वपूर्ण सन्दर्भ— पंचतन्त्र,

कौटिलीय अर्थशास्त्र, चरक तथा सुश्रुत संहिता से।
(ब) व्यावहारिक वेदान्त।

**आन्तरिकमूल्यांकन** अंक—20

**संस्तुत पाठ्यसामग्री—**


1. [illegible] (खण्ड 1 से 4), [illegible] द्विवेदी, [illegible] मालवीय, प्रकाशक— श्रीरामकृष्णदास, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी प्रेस, वाराणसी, 1912।
2. आत्रेय, भीखनलाल, भारतीय नीति—शास्त्र का इतिहास, हिन्दी समिति, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, प्रथम संस्करण, 1964।
3. [illegible] : [illegible] भारतीय एवं पाश्चात्य, न्यू भारतीय बुक कॉर्पोरेशन, दिल्ली, 2009।
4. तिलक, बालगंगाधर, गीता रहस्य, [illegible] प्रकाशन, वाराणसी, 2014।
5. महाभारत, [illegible], प्रथम संस्करण, 1900।
6. श्रीमद्भगवद्गीता, मधुसूदन सरस्वती (टीका), हिन्दी टीका सहित, संवत् 2000।
7. अर्थशास्त्र, [illegible], संवत् 1990।
8. पंचतन्त्र, [illegible], 2014।
9. वाल्मीकिरामायण, गीताप्रेस, गोरखपुर, 2018।
10. चरकसंहिता (1–4 भाग), [illegible] हिन्दी व्याख्या, [illegible] द्विवेदी, चौखम्बा ओरियंटल भवन।
11. सुश्रुतसंहिता, [illegible] हिन्दी टीका सहित, [illegible]।
12. [illegible], चौखम्बा, वाराणसी।
13. Ratna Dutta Sharma and Indrani Sanyal, *Dharmaniti o Sruti*, Mahabodhi Book Agency with Jadavpur University, 2009.
14. Dikshit Gupta, *Nitividya*, Paschimbanga Rajya Siksha Parishad, 2007.
15. Sailajakumar Bhattacharya, *Vedic Ethics*, Allied Publishers, 2000.
16. Amita Chatterjee, *Bharatiya Dharmaniti*, Jadavpur University Press, 2013.
17. N.K. Brahma, *Philosophy of the Hindu Sadhana*, London, 1934.
18. Surama Dasgupta, *Development of Moral Philosophy in India*, Munshiram Manoharlal Publishers, New Delhi, 1994.
19. Saral Jhingran, *Aspects of Hindu Morality*, Motilal Banarsidass Publ., Delhi, 1989.
20. B.K. Matilal, *Ethics and Epics*, Oxford University Press, Oxford, 2002.
21. Sitansu S. Chakravarti, *Ethics of the Mahabharata*, Munshiram Manoharlal Publishers, Delhi 2006.
22. Swami Vivekananda : *Practical Vedanta*, Calcutta : Advaita Ashrama, 1964 Sri Aurobindo : *The Life Divine*.
23. [illegible] नीतिशास्त्रम्, [illegible]


*******

## COURSE XII – DISCIPLINE IIA: नाट्य

(वैकल्पिक)
पूर्णांक : 100 (80+20)

**इकाई—1** अंक—16

(अ) भरतमुनि का नाट्यशास्त्र : महत्त्व एवं संरचना।
(ब) नाट्य का उद्भव, स्वरूप और महत्त्व।
(स) प्रेक्षागृह।

**इकाई—2** अंक—16

(अ) करण और अंगहार, संस्कृत नाटक के प्रारम्भिक तत्त्व (पूर्वरंग)।
(ब) रस, भाव, अभिनय— आंगिक तथा वाचिक (नाटक के संवाद तथा उनकी प्रस्तुति)।
(स) सात्त्विक (अभिनय का भावपूर्ण पक्ष) आहार्य (साजसज्जा, परिधान, रंगसामग्री निर्माण तथा उपयोग)।

**इकाई—3** अंक—16

(अ) दशरूपक और अठारह उपरूपक (स्वरूप और संरचना), धर्मी (रंगमंच प्रस्तुतीकरण के द्विविध प्रारूप), वृत्ति (चतुर्विध), प्रवृत्तियाँ (चतुर्विध)।
(ब) स्वर, आतोद्य (वाद्य संगीत) और सिद्धि।

**इकाई—4** अंक—16

(अ) संस्कृत नाटक का संक्षिप्त इतिहास।
(ब) भारतीय लोकरंगमंच परम्परा : एक प्रस्तावना।

इकाई–5 अंक–16

नाट्यशास्त्र की परवर्ती परम्परा

आन्तरिकमूल्यांकन अंक–20

संस्तुत पाठ्यसामग्री–


1. [illegible] 1919।
2. [illegible] वाराणसी 221005, 2019।
3. [illegible]
4. [illegible] वाराणसी–221005।
5. Natyashastra of Bharatmuni with English Translation of Manmohan Gosh (Calcutta) Hindi Translation, Shree Babulal Shukla.
6. Sangita-Ratnakara with any standard translation.
7. Natyashastra [illegible] Hindi Translation & Gloss, Ed. & Translator: Rewa Prasad Dwivedi, Indian Institute of Advanced Study (IIAS), Shimla & Aryan Books International, New Delhi, [illegible]
8. Bharata, the Natyashastra by Kapila Vatsyayan, Sahitya Academy, New Delhi, 1996.
9. Natya Sangraha, Dr. Radhavallabh Tripathi
10. History of Hindu Drama, Ghosh, M.M., Calcutta Firma, 1957.
11. The Oxford Companion to Indian Theatre, Editor: Ananda Lal, Oxford University Press, 2004
12. A New Bibliography of Sanskrit Drama, Radha Vallabh Tripathi, Pratibha Prakashan, New Delhi, [illegible]
13. Sanskrit Drama, A.B. Keith
14. The History of the Classical Sanskrit Literature, M.Krishnamachariyar, Vaijayanti Press, Madras, [illegible]
15. Hindu Drama, [illegible] Author: K.D. Tripathi, Ed. N.S.S. Raman.
16. Traditional Indian Theatre: Multiple Streams, Kapila Vatsyayan, National Books Trust, New Delhi, 1980.
17. The Traditional Indian Theatre, Varad Pandey, New Delhi, [illegible]


*******

COURSE XII – DISCIPLINE IIB : तुलनात्मक धर्म (वैकल्पिक)

पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई–1 अंक–16

अ) तुलनात्मक धर्म का अध्ययन और इसका महत्त्व।
ब) हिन्दू धर्म के धार्मिक सिद्धान्त : वैदिक तथा आगमिक [illegible]।
स) धार्मिक बहुलता, धार्मिक [illegible] और धर्मों की एकता।
द) धार्मिक अनुभूति का स्वरूप।

इकाई–2 अंक–16

अ) वेदमूलक धर्म– वैष्णव, शैव एवं शाक्तमत।
ब) हिन्दू, बौद्ध और जैन परम्पराओं में [illegible]।

इकाई–3 अंक–16

अ) ईरानी धर्म (जरथुस्त्र : सिद्धान्त और व्यवहार)।
ब) सिक्ख धर्म : [illegible] और सिद्धान्त।
स) भारतवर्ष का इस्लाम तथा ईसाई धर्म से परिचय।
द) भारतवर्ष में नवीन धार्मिक आन्दोलन तथा उनके अनुयायी।

इकाई–4 अंक–16

अ) [illegible]
ब) [illegible]
स) [illegible]
द) [illegible]

इकाई–5 अंक–16

अ) [illegible]
ब) [illegible]
स) [illegible]
द) धर्मवाद एवं विज्ञानवाद।
इ) तुलनात्मक धर्म के सिद्धान्तकारों का सामाजिक दायित्व।

आन्तरिकमूल्यांकन अंक–20

संस्तुत पाठ्यसामग्री–


1. ईश्वरप्रतिपत्तिप्रकाश, मधुसूदनसरस्वती, हिन्दी अनुवाद रेवाप्रसाद द्विवेदी, प्र. काशीहिन्दूविश्वविद्यालय, 28 महामनापुरी, वाराणसी 221005, 2019।
2. शांकरज्योति (मनीषापंचक), सोमरुकन्दन, पयस्वती प्रकाशन, कचौड़ी, वाराणसी, 2004।
3. निगम–आगम समन्वय, अप्रकाशित प्रकाशन श्री पीताम्बरा पीठ, दतिया।
4. भारतीय धर्म दर्शन, आचार्य बलदेव उपाध्याय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2014।
5. वेद रहस्य, श्री अरविन्द, श्री अरविन्द आश्रम, पाण्डीचेरी, 2015।
6. Secred books of the east, Chief Editor Maxmulr
7. Secred books of Hindu series, editor S.C. Basu.
8. *Religion a discourse in realist philosophy*, Pradyotkumar Mukhopadhyaya, University of Calcutta, 2014.
9. *Religious Language and Others Papers*, edited by N. S.S. Raman, Dept. of Philosophy, Banaras Hindu University, Varanasi.
10. *Reconstruction of Religious Thought in Islam*, M. Iqbal, Lahore: Ashraf, 1980.
11. Religion of Man, R. Tagore, Religion of Man, London; Unwin Books, 1961.
12. *Buddha and His Dhamma in Writings and Speeches*, B.R. Ambedkar, Bombay: Educational Dept., Govt of Maharashtra.
13. *The Quest History and meaning in Religion*, Mircea Eliade, the University of Chicago Press, 1984.
14. *The Sacred & The Profane The Nature of Religion*, Mircea Eliade, A Harvest Book World, New York, 1958.
15. *Knowing Beyond Knowledge*, Thomas A. Forsthoefel, Motilal Banarasidass, 2007.
16. *Philosophical Foundation of Hinduism*, R.S Mishra, Munshiram Menoharlal Pub, 2002.
17. *Who are the Sudras?* and *The Annihilation of Caste in Writings and Speeches*, B.R. Ambedkar, Bombay: Educational Dept., Govt of Maharashtra.S.K. Maitra, *TheEthics of the Hindus*, Calcutta University Press, 1925.
18. *Classical Indian Ethical Thought: A Philosophical Study of Hindi, Jaina and Buddhist Morals*, Kedar Nath Tiwari, Motilal Banarsidass Publishers, 1998.
19. Ernst Cassirer, Language and myth, translated by Susanne K. Langer, Dover Publication New York, 1953.
20. Foundation of Indian Culture, Vol. I-II, G.C. Pandey, Motilal Banarsidas, 1990.
21. Neoscience in Indian Philosophy, C. N. Mishra, Mithila Research Institute, Darbhanga.
22. Vachaspati Mishra On Adwita Vedant, S.S. Hasurkar, Mithila Research Institute, Darbhanga
23. स्मृति सहित... अनुवाद पुस्तक


*******

9.11.21

09.11.2021

## FOURTH SEMESTER

**COURSE XIII – PRACTICES II : महाभारत** (अनिवार्य)

पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई–1 अंक–16

1. महाभारत का काल — महाभारत के पारम्परिक तथा आधुनिक स्रोत– [illegible]
2. मूल कथा तथा अन्य संस्करणों की समीक्षा (भारतीय तथा अन्य)।

इकाई–2 अंक–16

1. [illegible]
   (क) [illegible]

इकाई–3 अंक–16

1. महाभारत भारतीय साहित्य, कला (लोक, शास्त्रीय तथा समकालीन कलाओं) के लिए उपजीव्य ग्रन्थ [illegible]।

इकाई–4 अंक–16

1. विदुरनीति तथा भगवद्गीता [illegible]।
2. राजनीति तथा शासन के सम्बन्ध में भीष्म का युधिष्ठिर को उपदेश।

इकाई– अंक–16

1. महाभारत की भौगोलिक एवं राजनीतिक सीमाएँ।
2. [illegible]

आन्तरिकमूल्यांकन अंक–20

संस्तुत पाठ्यसामग्री–

1. महाभारत, [illegible]
2. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, तृतीय खण्ड– आर्षकाव्य [illegible] (2000 ई.)।
3. महाभारत [illegible] गीताप्रेस, गोरखपुर, [illegible]।
4. Social & Political Institutions of Concepts of Justice and Dharma, Chousalkar Ashok S., Mittal Publications, Delhi, 1986.
5. Moral Dilemmas in the Mahabharata, B.K. Matilal, Indian Institute of Advanced Study, Shimla and Motilal Banarsidas, New Delhi, 1989.
6. Ethics and Epics, B.K. Matilal Oxford University Press, Oxford, 2002.
7. Ethics of the Mahabharata, [illegible] Chakravarti, Munshiram Manoharlal Publishers, Delhi, 2006.
8. The Dialogic Imagination : Chronotope and Heteroglossia, Ed. by Michael Holquist, Austin and London, University of Texas Press, 1981.

*******

**COURSE XIV – PRACTICES IIIA : पुराणपरिचय** (वैकल्पिक)

पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई–1 : अंक–16

1. पुराण शब्द का अर्थ। अष्टादश पुराण और उपपुराण परिचय, पुराणों के द्वारा वेदों का उपबृंहण।
2. पुराण एवं लक्षण, पुराणों तथा आगम का अन्तःसम्बन्ध।
3. पुराणों में कालगणना।

इकाई–2 अंक–16

1. धर्म, दिनचर्या, संस्कार, [illegible] की अवधारणा।
2. तप, यज्ञ, दान एवं क्रिया [illegible]।
3. [illegible] पद्धति।

इकाई–3 : अंक–16

1. पुराणों में भारतीय [illegible] का वर्णन– जम्बूद्वीप, [illegible]।
2. आख्यान एवं उपाख्यान : परिभाषा।
3. पुराणों में ऋषि एवं ऋषिकाएँ (बृहद्देवता [illegible] 27 ऋषिकाएँ)।

इकाई–4 : अंक–16

1. पुराणों में वर्णित विशिष्ट स्त्री तथा पुरुष चरित–
   — [illegible]
   — [illegible]

इकाई–5 : अंक–16

(1) [illegible] (2) [illegible] (3) [illegible] (4) [illegible]
(5) [illegible] (6) 52 शक्तिपीठ। (7) [illegible]

आन्तरिकमूल्यांकन अंक–20

संस्तुत पाठ्यसामग्री–

1. पुराणपरिशीलन, गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 1970।
2. पौराणिक कोश, [illegible], वाराणसी, [illegible] 2014।
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]
8. [illegible]
9. Puranic Records on Hindu Rites and Customs, R.C.Hazra, Motilal Banarasidas, New Delhi 1975
10. Ancient Historical Tradition, Pargiter F.E. Nabu Press, 2010.
11. Geography, People and Geodynamics of India in Puranas and Epics, Vaidya K.S. First Ed., Aryan Books International Publication, New Delhi, 2012
12. Geographical Concepts in Ancient India, Bechan Dubey, National Geographical Society of India, Banaras Hindu University, Varanasi, 1967.
13. Geographical Horizon of The Mahabharata, S.N.Pandey, Bharat Bharati Publication, Durgakund, Varanasi, 1980.
14. The Geographical Information in Skand Puran, U.K. Jha, Mithila Research Institute, Darbhanga.

*******

**COURSE XIV– PRACTICES IIIB : भारतीय स्थापत्य** (वैकल्पिक)

पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई–1 : भारतीय स्थापत्य का उद्भव व विकास– अंक–16

(अ). आगम : देवालय एवं देवप्रतिमा।
(ब). साहित्यिक सन्दर्भ।
(स) पुरातात्विक सन्दर्भ।

इकाई–2 : प्रारम्भिक स्थापत्य– अंक–16

(अ). वैदिक साहित्य [illegible] में वर्णित सन्दर्भ।
(ब). [illegible]
(स). [illegible] सिन्धु सभ्यता [illegible] का अध्ययन।
(द). स्तूप और गुफा [illegible] का उद्भव व विकास।
(इ) मौर्य प्रासाद।

इकाई–3 : मन्दिर स्थापत्य का उद्भव, विकास एवं उनका शास्त्रीय स्वरूप– अंक–16

(अ) मन्दिर स्थापत्य की प्रमुख शैलियाँ : नागर, वेसर एवं द्राविड़।
(ब) गुप्तकालीन मन्दिर : विकास और विशेषताएँ।

इकाई–4 :

(अ) उत्तर भारत के मन्दिर (ओसियाँ (राजस्थान), खजुराहो, भरहुत, भुवनेश्वर, कोणार्क और मोढेरा के सन्दर्भ में)। अंक–16

(ब) दक्षिण भारत के मन्दिर (ऐहोल, ऐलोरा, महाबलीपुरम, कांचीपुरम, तंजौर, मदुरै के सन्दर्भ में)।

इकाई–5 : शाला, मूर्तिविज्ञान तथा नगरयोजना— अंक–16

(अ) रंगशाला।

(ब) वास्तु।

(स) मूर्तिविज्ञान।

(द) सामाजिक निर्मिति (आवास, धर्मशालाएँ, आश्रम एवं विद्यालय)।

आन्तरिकमूल्यांकन अंक–20

संस्तुत पाठ्यसामग्री—


1. [illegible]
2. महाभारत, गीताप्रेस संस्करण, 2017।
3. विष्णुधर्मोत्तरपुराण (तृतीय खण्ड), [illegible] संस्करण, [illegible] 2070।
4. अग्निपुराण, गीताप्रेस संस्करण, 2016।
5. मत्स्यपुराण, गीताप्रेस संस्करण, 2016।
6. अर्थशास्त्र, [illegible], वाराणसी, [illegible]।
7. [illegible]
8. वास्तुविद्या, [illegible] डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू', चौखम्बा संस्कृत सीरीज़ ऑफिस, वाराणसी, 2016।
9. [illegible]
10. मानसोल्लास (भाग 1–3), [illegible] डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू', चौखम्बा संस्कृत सीरीज़ ऑफिस, वाराणसी, 2016।
11. भारतीय संस्कृति की रूपरेखा, [illegible], विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, तृतीय संस्करण, 2020।
12. भारतीय कला, वासुदेवशरण अग्रवाल, पृथ्वी प्रकाशन, लंका, वाराणसी, [illegible]।
13. भारतीय वास्तुकला का इतिहास, कृष्ण दत्त वाजपेयी, [illegible], लखनऊ, [illegible] 2016.
14. भारतीय संस्कृति के आधार, श्री अरविन्द, [illegible], पांडिचेरी, तृतीय संस्करण, 2017।
15. भारत की चित्रकला, रायकृष्ण दास, भारती भण्डार, इलाहाबाद, [illegible]।
16. भारतीय मूर्तिकला, [illegible], दिल्ली, 1978।
17. भारतीय मूर्तिकला, रायकृष्ण दास, काशी, संवत् [illegible]।
18. मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला, [illegible] तिवारी और कमल गिरि, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण, 2000।
19. *Vāstu-Vidyā: Hindu Science of Architecture*, Shukla D. N., Munshiram Manoharlal Publishers, New Delhi, 1993.
20. *Bharata, the Nāṭyaśāstra* (Six and Seventh Chapter), M. M. Gosh, Asiatic Society, Kolkata, 1950.
21. *Gupta Temple Architecture*, Agrawal, P.K., Prithvi Prakashan, Varanasi, 1968.
22. *South Indian Paintings*, C. Sivaramamurti, National Museum, New Delhi, 1968.
23. *Transformation of Nature in Art*, Coomaraswamy, Ananda K., Cambridge Mass, 1934.
24. *Introduction to Indian Art*, Coomaraswamy, Ananda K. N. Delhi: Munshiram Manoharlal Pub., 1996.
25. *The Dance of Śiva*, Coomaraswamy, Ananda K., Rupa Publications, Pvt. Ltd., Reprint, 2014.
26. *Symbolism of Indian Architecture*, Coomaraswamy, Ananda K., Historical Research Documentation Programme, Jaipur, 1983.
27. *The Dharma- Chakra- Pravartana in Literature and Art*, Deena Bandhu Pandey, New Delhi, 1973.
28. *Sūrya in Indian Tradition*, Mishra, R.N., Aryan Books International, New Delhi, 2000.
29. *Temples of India*. Vols. 1-2, Deva, Krishna, Archaeological Survey of India, New Delhi, 1995.
30. *The Hindu Temple*. Vols. 1-2, Kramrisch, Stel a, Motilal Banarsidass, Delhi, 1976.
31. *The Art of India through the ages*, Kramrisch, S., Phaidon Press, London, 1954.
32. *The Art of Ancient India*, Huntington, S.L., Weather hill Publication, New York, 1985.
33. *Mathurā Sculptures*, Joshi, N.P., Sandeep Prakashan, New Delhi, 2004.
34. *Indian Architecture (Buddhist and Hindu Period)*, Brown, P., Taraporevala Sons and Company, Bombay, 1976.
35. *Architecture of Mānasāra*, Acharya P.K., Oxford University Press, London, 1934.
36. *Indian Art*, Agrawala, V.S., Prithvi Prakashan, Lanka, Varanasi, 1965.
37. *Gupta Art*, Agrawala, V.S., Prithvi Prakashan, Lanka, Varanasi, 1965.


*******

COURSE XIV: PRACTICES IIIC : पाणिनीय एवं पाश्चात्य भाषाविज्ञान (वैकल्पिक)

पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई–1 : पूर्व–पाणिनीय भाषाविज्ञान— अंक–16

पूर्व–पाणिनीय भाषाविज्ञान का परिचय, पूर्व–पाणिनीय व्याकरण : ऐन्द्र सम्प्रदाय (कातन्त्र व्याकरण) तथा शैव सम्प्रदाय (पाणिनीय व्याकरण), अष्ट व्याकरण : ब्राह्म, चान्द्र, याम्य, रौद्र, वायव्य, वारुण, सौम्य, वैष्णव।

इकाई–2 : पाणिनीय भाषाविज्ञान— अंक–16

नव व्याकरण : ऐन्द्र, चान्द्र, काशकृत्स्न, कौमार, शाकटायन, सारस्वत, आपिशलि, शाकल्य, पाणिनीय। पाणिनीय शिक्षा : वाक्–ध्वनि तथा छन्द : शास्त्रीय विशेषताएँ, अष्टाध्यायी का परिचय, माहेश्वरसूत्र की संरचना, शब्द क्या है? शब्दों का निर्माण, प्रातिपदिक की अवधारणा, सुबन्त (Nominal Suffixes), तिङन्त (Verbal Suffixes), कृदन्त एवं तद्धित शब्दों का निर्माण, सन्धि (Morphophonemics/Morpho-Phonology), पाणिनि की अभिव्यक्ति के नियम एवं प्रकार।

इकाई–3 : वृत्ति एवं शाब्दबोध की अवधारणा— अंक–16

वृत्ति की अवधारणा : समास (Compounding) वृत्ति, कृदन्त वृत्ति (Verbal Nouns) तथा तद्धित वृत्ति (Derivations), सनाद्यन्त धातु वृत्ति, वाक्य : कारक एवं विभक्ति, भारतीय व्याकरणीय परम्परा में शाब्दबोध सिद्धान्त : आकांक्षा (Establishing relations), सन्निधि (Planarity Constraint) एवं योग्यता (Semantic restrictions)।

इकाई–4 : पाश्चात्य भाषाविज्ञान— अंक–16

पाश्चात्य भाषाविज्ञान परम्परा : ब्लूमफील्ड, हॉकेट, सस्यूर, चॉमस्की का परिप्रेक्ष्य, भाषाविज्ञान, भाषा का दर्शन, आधुनिक भाषाविज्ञान, पाणिनीय व्याकरण तथा पुनर्लेखन व्याकरण, पाश्चात्य जगत में पाणिनि का प्रभाव।

इकाई–5 : पाणिनीय भाषाविज्ञान के अनुप्रयोग— अंक–16

संस्कृत संगणनात्मक भाषाविज्ञान का परिचय, Digital Lexical Resources, पद जनक (Word Generators), पदविश्लेषक (Word Analysers), सन्धिविच्छेदक (Sandhi Splitter), समासजनक, तिङन्तपद, कृदन्त, तद्धित जनक, समास जनक, अमरकोष का ज्ञान–संजाल (Amarakosha), संस्कनेट (Sansknet), अनुक्रमणिका (Concordances), संस्कृत वाक्य विश्लेषण (Sanskrit Parsing).

आन्तरिकमूल्यांकन अंक–20

संस्तुत पाठ्यसामग्री—


1. Allen, W. S. 1953. *Phonetics in Ancient India*. London: OUP.
2. Bharati, A. et al. 1995. *Natural Language Processing: A Paninian Perspective*. New Delhi: Prentice Hall of India.
3. Belvalkar, S. K. 1975. *Systems of Sanskrit Grammars*. New Delhi: Bharatiya Vidya Prakashan.
4. Bhattojidikshita, 1960. *Vaiyakaranasiddhantakaumudi*, Part – I and Part – II., Varanasi: Chowkamba Sanskrit Series Office.
5. Cardona, G. 1997. *Pāṇini: A Survey of Research*. Varanasi: Motilal Banarsidass Publication.
6. Ghosh, Manmohan. 1938. *Paniniya Siksha*. Calcutta: University of Calcutta.
7. Jha, Vashishtha Narayan. 1992. *Pre- Pāṇinian Grammatical Traditions (Part-I). A Linguistic Analysis of the Rgveda Padapāṭha*. India: Sri Satguru Publications.
8. Kulkarni, A., 2019. *Sanskrit Parsing: Based on the Theories of Śābdabodha*. Indian Institute of Advanced Study, Shimla.
9. Kiparsky, P. and Staal, J.F., 1969. *Syntactic and semantic relations in Pāṇini. Foundations of Language*, pp 83-117.
10. Namboodiri, E.V.N. 2016. *Origin and Development of Modern Linguistics*. New Delhi: Crescent Publishing Corporation.
11. Rath, Gayathri. 2000. *Linguistic Philosophy in Vakyapadiya*. Varanasi: Bharatiya Vidya Prakashan.
12. Staal, J.F., 1972. *A Reader on the Sanskrit Grammarians*. London: Cambridge.
13. Subrahmanyam, P.S., 1997. *Pāṇini and Modern Linguistics*. Journal of the Inst. of Asian Studies, 15.
14. Subrahmanyam, P.S. 1999. *Pāṇinian Linguistics*. Institute for the Study of Languages and Cultures of Asia and Africa. Tokyo: Tokyo University of Foreign Studies.
15. Shastri, Ramnath Tripathy, (Ed.) 2014. *Sanskrit Vyakarana Sastra ka Itihasa*. (History of Sanskrit Grammar). Delhi: Chaukhambha Orientalia.


*******

**COURSE XV – DISCIPLINE IIIA : साहित्यसिद्धान्त** (वैकल्पिक)

पूर्णांक : 100 (80+20)

**इकाई—1** अंक—16

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]

**इकाई—2** अंक—16

1. [illegible]
2. [illegible]
3. शब्दशक्तियाँ।
4. [illegible]

**इकाई—3** अंक—16

1. साहित्यसमीक्षा के सिद्धान्त—
   (क) रस, अलंकार, रीति (गुण)
   (ख) ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य
2. [illegible]
3. [illegible]

**इकाई—4** अंक—16

1. साहित्यशास्त्र के अर्वाचीन सिद्धान्त— [illegible]

**इकाई—5** अंक—16

1. [illegible]

**आन्तरिकमूल्यांकन** अंक—20

**संस्तुत पाठ्यसामग्री—**


1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]
8. [illegible]
9. [illegible]
10. [illegible]
11. [illegible]
12. [illegible]
13. [illegible]
14. [illegible]
15. [illegible]
16. [illegible]
17. Jagannatha Panditaraja: *Rasagangadhara*, with the commentary of Nagoji Bhatta, Nirnayasagar Press, Bombay, 1874.
18. Kane, P.V.: *History of Sanskrit Poetics*, Motilal Banarsidass, Delhi, 1971.
19. Ed. Pt. Reva Prasada Dwivedi: Mahimabhatta, Vyaktiviveka, with a Sanskrit commentary of Rajanaka Ruyyaka and Hindi commentary and notes, Chowkhamba Sanskrit Series Office, Varanasi-1, 1974.
20. Raghavan V.: *Sanskrit Drama in Performance*, Ed. Rachel M. Baumer and James R. Brandon, Hawaii, 1981.
21. Rajendran, C.: 'Mahimabhatta's Concept of Poetry as a Sastra' *The Adyar Library Bulletin*, 1990.
22. Ram Awadh Dwivedi and Vikramaditya Rai: *Literary Criticism*, Motilal Banarsidass, Delhi, 1988.
23. Sharma, Mukund Madhav: *The Dhvani Theory in Sanskrit Poetics*, Chowkhamba Sanskrit Series Office, Varanasi-1, 1968.
24. An Exposition of Vyakti-Viveka, Trilokinath Jha, Mithila Research Institute, Darbhanga.
25. An Exposition of the Chitra Mimamsa, Mangal Pati Jha, Mithila Research Institute, Darbhanga.


*******

**COURSE XV – DISCIPLINE IIIB : भारतीय सैन्यविज्ञान व रणनीति** (वैकल्पिक)

पूर्णांक : 100 (80+20)

**इकाई—1 : सैन्यविज्ञान और रणनीति—** अंक—16

1. शत्रु का अर्थ, पर्याय, लक्षण, भेद, शत्रु का कारण, शत्रु शमन, शत्रु शमन के साधन।
2. मित्र का अर्थ, पर्याय, लक्षण भेद, मित्र का कारण, मित्र सम्प्राप्ति, मित्र सम्प्राप्ति के साधन।
3. सैन्य विज्ञान का अर्थ, पर्याय, स्वरूप विमर्श, उद्भव व विकास।
4. रणनीति का अर्थ, पर्याय, स्वरूप विमर्श, उद्भव व विकास।

**इकाई—2 : सेना का स्वरूप व युद्धनीति—** अंक—16

1. [illegible]

**इकाई—3** अंक—16

1. [illegible]

**इकाई—4 : उपाय व षाड्गुण्य का सैन्यविज्ञान व रणनीति में भूमिका—** अंक—16

1. [illegible]
2. [illegible]

**इकाई—5 : सैन्यविज्ञान व रणनीति का ज्ञानमीमांसीय पक्ष—** अंक—16

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]

**आन्तरिकमूल्यांकन** अंक—20

**संस्तुत पाठ्यसामग्री—**


1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]
8. [illegible]
9. [illegible]
10. [illegible]
11. [illegible]
12. *Vasistha's Dhanurveda Samhita*, translated into English by Purnima Ray, J.P. Publishing House, Delhi, 2003.
13. *Indian Art of War*, Major Alfred David, Atma Ram and Sons, Kashmiri gate, Delhi-6, 1953.
14. *Indian Military its History and Development*, S.T. Das, Sagar Publications, New Delhi, 1969.
15. *Cambridge History of India*, edited by S.W. Haig, Franklin Classic, 2018.
16. *Famous Battles in Indian History*, T.G. Subramanyam, [illegible] Publishers, Dehradun, 1969.


*******

COURSE XVI – DISCIPLINE IVA : भारतीय कला

(वैकल्पिक)
पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई—1 अंक—16

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]

इकाई—2 : [illegible] अंक—16

इकाई—3 : [illegible] अंक—16

इकाई—4 अंक—16

1. [illegible]

इकाई—5 अंक—16

1. हिन्दू प्रतिमा विज्ञान।
2. [illegible]

आभ्यन्तरिकमूल्यांकन अंक—20

संस्तुत पाठ्यसामग्री—


1.–15. [illegible]
16. Bharata, the Natyasastra (VI and VII Chapter), Translation: M.M. Ghosh, Asiatic Society, Kolkata, 1950.
17. Vastu-Sastra Hindu Science of Architecture, Shukla D. N., Munshiram Manoharlal Publishers, New Delhi, 1993.
18. The Dharma Chakra Pravartan in Literature and Art, Geeta Bandhu Pandey, New Delhi, 1978.
19. Painting of India, Barrett, D. & B Gray, Lausanne: Skira, 1963.
20. The Jaina Iconography, Bhattacharya, B.C. Delhi: Motilal Banarsidass, 1974.
21. Shilpaprakasha, Boner, Alice and Sadashivarath Sharma. New Delhi: Indira Gandhi National Centre for the Arts and MotilalBanarsidass Publishers, 2005.
22. Symbolism of Indian Architecture, Coomaraswamy, Ananda K. Jaipur: Historical Research Documentation Programme, 1983.
23. Transformation of Nature in Art, Coomaraswamy, Ananda K., Cambridge Mass, 1934.
24. Introduction to Indian Art, Coomaraswamy, Ananda K. New Delhi: Munshiram Manoharlal Publishers, 1999.
25. Temples of India, Vols. 1–2, Deva, Krishna, New Delhi: Archaeological Survey of India, 1995.
26. Silpa in Indian Tradition, Mishra, R.N., New Delhi: Aryan Books International, 2009.
27. Facets of South Indian Art and Architecture, Nagaswamy, R., New Delhi: Aryan Books International, 2003.
28. Mohen Painting, Anand Krishna, Banaras Hindu University, 1963.
29. Indian Miniatures, Archer, W.G., New York: New York Graphic Society, 1960.
30. Indian Painting, Barrett, D. & B Gray, Geneva: d'art Albert Skira, 1978.
31. Pahari Miniature Painting, Khandalavala, K., Bombay: The New Book Company, 1958.
32. Basohli Painting, Randhawa, M.S., New Delhi: Publications Divisions, Govt. of India, 1959.
33. Sadanga or Six Limbs of Painting, Tagore, A., Indian Society of Oriental Art, Calcutta, 1956.
34. Kala-tattva kosa, volume I – VII, IGNCA, New Delhi.
35. Elements of Hindu Iconography, T. A. Gopinath Rao, Law Printing House, Mount Road, Madras, 1916.
36. The Development of Hindu Iconography, Jitendra Nath Banerjea, University of Calcutta, 1941.


*******

COURSE XVI- DISCIPLINE IVB: विधि तथा न्यायशास्त्र

(वैकल्पिक)
पूर्णांक : 100 (80+20)

इकाई—1 : [illegible]
अंक—16

1. [illegible]
2. [illegible]

इकाई—2 : [illegible] अंक—16

1. [illegible]

इकाई—3 : [illegible] अंक—16

अ) [illegible]
ब) [illegible]

इकाई—4 : अंक—16

अ) [illegible]

इकाई—5 : [illegible] अंक—16

अ) [illegible]
ब) [illegible]

आभ्यन्तरिकमूल्यांकन अंक—20

संस्तुत पाठ्यसामग्री—


1.–5. [illegible]
6. P.V. Kane, History of Dharmasastra, Vol-1& 3, Poona: BORI, 2017.
7. G.N. Jha, Hindu Law in its Sources, Varanasi: Sampurnanand Sanskrit University, 2017.
8. K.L. Sarkar, Principles of Mimamsa Rules of Interpretation, Sri Markandeya Kalau, 1993.
9. P.N. Sen, Hindu Jurisprudence, Kolkata: Calcutta University, 2020.
10. P.V. Kane, Vyavahara Mayukh of Nilakantha, Poona: BORI, Rashtriya Sanskrit Sansthan, 2000.
11. B.K. Swain, The Voice of Vedhi, Varanasi: Chaukhamba Sanskrit Sansthan, 2013.
12. Dharmasastra on Law & Ethics, Delhi: Akshyaya Prakashan, 2019.
13. Shivaji Sing, Evolution of Smriti Law, Varanasi, 2007.
14. Paras Diwan, Modern Hindu Law, Delhi, 2018.
15. D.F. Mulla, Principles of Hindu Law, Delhi, 2013.


*******

विचार-विमर्श के अनन्तर विद्यापरिषद् ने दर्शन संकाय बोर्ड द्वारा संस्तुत हिन्दू अध्ययन पाठ्यक्रम आचार्य (एम.ए.) पर अपनी स्वीकृति प्रदान की।

**कार्यक्रम संख्या -5-** परीक्षा समिति की संस्तुति दिनांक 26.08.2021 के प्रस्ताव सं. 32- श्रीमती प्रियंका सिंह की शास्त्री उपाधि एवं परीक्षा समिति की संस्तुति दिनांक 28.10.2021के प्रस्ताव सं.2-अनुक्रमांक 21321601 के परीक्षाफल निरस्तीकरण पर विचार।

विद्यापरिषद् के समक्ष परीक्षा समिति की बैठक दिनांक 26.08.2021 एवं 28.10.2021 की अधोलिखित संस्तुति प्रस्तुत की गयी।

**परीक्षा समिति दिनांक 26.08.2021 का निर्णय)**

**प्रस्ताव 32.**– अवगत कराना है कि श्रीमती प्रियंका सिंह ने वर्ष 2009 में अनुक्रमांक 74906 से शास्त्री प्रथम, वर्ष 2010 में अनुक्रमांक 112798 से शास्त्री द्वितीय तथा वर्ष 2011 में अनुक्रमांक 331234 से शास्त्री तृतीय की परीक्षा उत्तीर्ण की है। श्रीमती प्रियंका सिंह की उत्तीर्णता के सम्बन्ध में **श्री अशोक कुमार सिंह** ने राजभवन के साथ ही माननीय उच्च न्यायालय में याचिका संख्या 12532/20 से **बगैर प्रवेश** अर्हता के अवैधानिक रूप से प्राप्त शास्त्री उपाधि निरस्त करने की शिकायत किया है। माननीय, उच्च न्यायालय द्वारा पारित आदेश दिनांक 18.12.2020 के अनुपालन में श्रीमती सिंह को अपने इण्टरमीडिएट परीक्षा के अंकपत्र व प्रमाणपत्र के साथ परीक्षा नियंत्रक के समक्ष उपस्थित होने का पत्र प्रेषित किया गया। जिसके क्रम में श्रीमती सिंह दिनांक 19.02.2021 को परीक्षा नियंत्रक के समक्ष उपस्थित होकर अपने इण्टरमीडिएट परीक्षा वर्ष 2002 अनुक्रमांक 0508951 के प्रस्तुत मूल अंकपत्र एवं प्रमाणपत्र के सम्बन्ध में लिखित रूप से अपना अभिकथन प्रस्तुत की हैं। जिसके आलोक में श्रीमती प्रियंका सिंह पर **बगैर शास्त्री में प्रवेश अर्हता के ही शास्त्री प्रथम में प्रवेश लेकर शास्त्री तीनों खण्ड की परीक्षा उत्तीर्ण कर उपाधि प्राप्त करने की पुष्टि होती है** क्योंकि शास्त्री प्रथम में प्रवेश के लिए आधारभूत इण्टरमीडिएट परीक्षा में श्रीमती सिंह का विषय **हिन्दी साहित्य,** अंग्रेजी, भारतीय इतिहास, **गृहविज्ञान, समाजशास्त्र है, जिसमें संस्कृत विषय नहीं है। संस्कृत विषय के साथ इण्टरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण होना निर्धारित अनिवार्य प्रवेश अर्हता है।**

अतः उपर्युक्त के आधार पर शिकायतकर्ता श्री अशोक कुमार सिंह के शिकायत की पुष्टि होने व राजभवन तथा माननीय उच्च न्यायालय द्वारा प्रकरण निस्तारण के लिये दिये गये आदेश के आलोक में श्रीमती प्रियंका सिंह द्वारा बगैर प्रवेश अर्हता के प्राप्त शास्त्री उपाधि को निरस्त करने हेतु प्रकरण परीक्षा समिति के विचारार्थ प्रस्तुत है।

**निर्णय**–उपर्युक्त प्रस्ताव के साथ समस्त सम्बन्धित प्रपत्रों की पत्रावली समिति के समक्ष प्रस्तुत किया गया। जिसके अनन्तर समिति ने श्रीमती प्रियंका सिंह के विरूद्ध की गयी शिकायत, के सम्बन्ध में श्रीमती सिंह को विश्वविद्यालय द्वारा प्रेषित पत्रों, सम्बन्धित महाविद्यालय के प्राचार्य द्वारा दी गयी एतदर्थ आख्या, तथा श्रीमती सिंह द्वारा प्रस्तुत बिना संस्कृत विषय से उत्तीर्ण इण्टरमीडिएट परीक्षा के अंकपत्र/प्रमाणपत्र के साथ लिखित स्वीकारोक्ति बयान एवं महामहिम श्री राज्यपाल व माननीय उच्च न्यायालय द्वारा दिये गये आदेश के आलोक में समिति ने सम्यक रूप से व्यापक विचार–विमर्श के अनन्तर सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि श्रीमती सिंह के **इण्टरमीडिएट परीक्षा वर्ष 2002 अनुक्रमांक 0508951 के अंकपत्र/प्रमाणपत्र** पर संस्कृत विषय का अंकन नहीं हैं, **जिससे प्रमाणित होता है कि श्रीमती सिंह द्वारा बिना प्रवेश अर्हता के ही शास्त्री उपाधि प्राप्त किया गया है। अतः बिना प्रवेश अर्हता के उत्तीर्ण शास्त्री प्रथम वर्ष 2009 अनुक्रमांक 74906** शास्त्री द्वितीय वर्ष 2010 **अनुक्रमांक 112798 तथा शास्त्री तृतीय वर्ष 2011 अनुक्रमांक 331234 से उत्तीर्ण** परीक्षा एवं उपाधि निरस्त **किया जाता है। तथा निर्देश दिया जाता है कि अन्य प्राधिकारियों से एतदर्थ** अनुमोदन प्राप्त कर लिया जाय।

**परीक्षा समिति दिनांक 28.10.2021**

**प्रस्ताव 02**–2021 वर्षीय शास्त्री तृतीय के परीक्षाफल प्रकाशन के पश्चात संज्ञान में आया कि अनुक्रमांक 21321601 के छात्र जिसका विषय नव्यव्याकरण व नेपाली है का, परीक्षाफल अवैधानिकरूप से पूर्ण कराया गया है। जिसके परीक्षाफल निरस्तीकरण पर विचार।

**निर्णय**–उपर्युक्त प्रस्ताव से प्रस्तुत प्रकरण से सम्बन्धित तीनों परीक्षकों से मांगी गयी आख्या के सापेक्ष प्राप्त आख्या को आधार मानकर लिये गये निर्णय का विवरण अधोलिखित है–

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1 | परीक्षक डॉ0 नागेन्द्र नारायण मिश्र से अपेक्षित आख्या का पत्रांक 4976/21 दिनांक 23.10.21 | **स्पष्टीकरण का पत्र**<br>2021 वर्षीय परीक्षा मे परीक्षक संख्या 615/03 तथा 616/3 से शास्त्री तृतीय के तृतीय पत्र व चतुर्थ पत्र नव्यव्याकरण विषय के बण्डल संख्या–12–12 की उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन आपके द्वारा किया गया है। मूल्यांकन हेतु आपको दिये गये बण्डल की उत्तरपुस्तिकाओं के अतिरिक्त आपने अनुक्रमांक 21321601 की उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन कर अंकचिट में अंक प्रदान किया है, जबकि मूल्यांकन हेतु दिये गये डाकेट में अनुक्रमांक 21321601 का उल्लेख ही नहीं था। | **प्राप्त आख्या–**<br>डॉ0 मिश्र ने अपने पत्र 28.10.2021 के द्वारा सूचित किया है कि सम्प्रति वे जनपद से बाहर हैं 31 अक्टूबर के बाद आख्या प्रस्तुत करेंगे। | **परीक्षा समिति का निर्णय–**<br>परीक्षा समिति ने उक्त तीनों प्राप्त आख्या व परीक्षाफल पूर्णता के लिये किये गये कदाचार सम्बन्धी कार्य के आलोक में समिति ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि **परीक्षा के सम्बन्ध में निर्णय बाद में लिया जायेगा सम्प्रति शास्त्री तृतीय वर्ष 2021 अनुक्रमांक 21321601 का परीक्षाफल निरस्त किया जाय तथा परीक्षाफल निरस्तीकरण का अनुमोदन विद्या परिषद एवं कार्यपरिषद से करा लिया जाय।** |
| 2 | परीक्षक श्री कमल नयन निवास रिजाल से अपेक्षित आख्या का पत्रांक 4977/21 दिनांक 23.10.21 | **स्पष्टीकरण का पत्र**<br>2021 वर्षीय परीक्षा में परीक्षक संख्या 733 तथा 734 से शास्त्री तृतीय के पंचम व षष्ठ पत्र नेपाली विषय के बण्डल संख्या–01–01 की उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन आपके द्वारा किया गया है। मूल्यांकन हेतु आपको दिये गये बण्डल की उत्तरपुस्तिकाओं के अतिरिक्त आपने अनुक्रमांक 21321601 की उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन कर अंकचिट में अंक प्रदान किया गया है, जबकि मूल्यांकन हेतु दिये गये डाकेट में अनुक्रमांक 21321601 का उल्लेख ही नहीं था। | **प्राप्त आख्या–**<br>श्री रिजाल ने अपने पत्र 26.10.2021 के द्वारा सूचित किया है कि मेरे द्वारा यह मानवीय भूलवश हुआ है, जानबूझ कर नहीं किया गया है। कृपया मुझे एतदर्थ क्षमा किया जाय। | |
| 3 | परीक्षक डॉ0 ब्रज बिहारी त्रिपाठी से अपेक्षित आख्या का पत्रांक 4978/21 दिनांक 23.10.21 | **स्पष्टीकरण का पत्र**<br>2021 वर्षीय परीक्षा में परीक्षक संख्या 613/01 से शास्त्री तृतीय के तृतीय पत्र नव्यव्याकरण विषय के बण्डल संख्या–12 की उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन आपके द्वारा किया गया है। मूल्यांकन हेतु आपको दिये गये बण्डल की उत्तरपुस्तिकाओं के अतिरिक्त आपने अनुक्रमांक 21321601 की उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन कर अंकचिट में अंक प्रदान किया गया है, जबकि मूल्यांकन हेतु दिये गये डाकेट में अनुक्रमांक 21321601 का उल्लेख ही नहीं था। | **प्राप्त आख्या–**<br>श्री रिजाल ने अपने पत्र 26.10.2021 के द्वारा सूचित किया है कि मेरे द्वारा यह मानवीय भूलवश हुआ है, जानबूझ कर नहीं किया गया है। कृपया मुझे एतदर्थ क्षमा किया जाय। | |

**परीक्षा समिति की उपर्युक्त संस्तुतियों पर विचार करते हुए विद्यापरिषद् ने परीक्षा समिति की संस्तुति को परिनियमित व्यवस्था के अनुसार अपनी स्वीकृति प्रदान की।**

**कार्यक्रम संख्या -6-** विश्वविद्यालय में अध्यापकों के नियुक्ति सम्बन्धी नियुक्तियों में पारदर्शितापत्र पर विचार।

विद्यापरिषद् के समक्ष विश्वविद्यालय में विभिन्न शैक्षणिक पदों पर सीधी भर्ती के माध्यम से नियुक्ति हेतु साक्षात्कार में पारदर्शिता के उद्देश्य से मा॰ कुलाधिपति महोदया के आदेश सं.3019/32-जी.एस./2020, दिनांक 18 मई, 2021 सं.ई.4249/जी.एस., दिनांक 2 जुलाई, 2021 एवं तत्सम्बन्धित पत्र सं.ई.5862/जी.एस., दिनांक 3 सितम्बर, 2021 को प्रस्तुत किया गया-

**राज्यपाल सचिवालय, उत्तर प्रदेश**
**लखनऊ 226027**
संख्या [illegible]
दिनांक [illegible]

**आदेश**

[illegible] **विश्वविद्यालय में शास्त्रार्थ** [illegible] **विश्वविद्यालय में शास्त्रार्थ** [illegible]

अ — [illegible]

[illegible]

9) छानबीन एवं चयन समिति द्वारा साक्षात्कार की प्रक्रिया सम्पन्न की जायेगी और academic के मूल्यांकन एवं विशेषज्ञ के निर्णय के अनुपात में चयन किया जायेगा।

10) Teaching Skills तथा साक्षात्कार की प्रक्रिया की ऑडियो एवं वीडियो रिकार्डिंग की जायेगी और इसे कम से कम 02 वर्षों तक सुरक्षित रखने का दायित्व कुलसचिव का होगा।

**ब— सह आचार्य एवं आचार्य**

1) **सह आचार्य एवं आचार्य** के पदों पर सीधी भर्ती हेतु निम्नलिखित बिन्दुओं के दृष्टिगत गुणांकन होगा :-

| | | |
|---|---|---|
| (i) | स्नातक/स्नातकोत्तर/एम0फिल0 एवं समतुल्य डिग्री के आधार पर बेसिक अकादमिक स्कोर (Basic Academic Score) | 20 अंक |
| (ii) | विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्धारित मानक अनुसार एपीआई स्कोर, चिकित्सा/कृषि शिक्षा/प्राविधिक शिक्षा आदि विश्वविद्यालयों के सन्दर्भ में सम्बन्धित विश्वविद्यालय की नियामक संस्था द्वारा निर्धारित मानक अनुसार एपीआई स्कोर की गणना की जायेगी। यदि नियामक संस्था द्वारा कोई निर्देश नहीं है तो ऐसी दशा में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्धारित मानक लागू होंगे। | 60 अंक |
| (iii) | साक्षात्कार | 20 अंक |
| | **पूर्णांक** | 100 अंक |

2) प्राप्त आवेदन पत्रों की जांच के लिए एक समिति का गठन किया जायेगा जो कि समस्त प्राप्त आवेदन पत्रों की जांच कर उनमें अंकित विवरण के अनुसार Basic Academic Scores तथा API Score की गणना सुनिश्चित करेगी। इस समिति को जांच समिति (Scrutiny Committee) कहा जायेगा।

3) बेसिक अकादमिक स्कोर (Basic Academic Score) की गणना संलग्नक 1 के अनुसार होगी।

4) सभी प्रकार के पदों पर Basic Academic Scores तथा API Score की इनकी गणना करके सूचना प्रकाशित किया जायेगा और इसके सम्बन्ध में आपत्तियाँ आमन्त्रित की जायेंगी। आपत्तियाँ प्राप्त करने हेतु 07 दिन का समय दिया जायेगा। सभी आपत्तियाँ ई–मेल के माध्यम से प्राप्त की जायेंगी तथा इसके लिए विज्ञापन के विवरण के साथ ही एक ई–मेल आईडी प्रकाशित की जायेगी। निर्धारित अवधि में यदि किसी अभ्यर्थी की कोई आपत्ति प्राप्त होती है तो उसका निस्तारण करके संशोधित सूची प्रकाशित किया जायेगा। यह कार्य जांच समिति द्वारा निष्पादित किया जायेगा।

5) Basic Academic Scores तथा API Score के संशोधित स्कोर के आधार पर विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक द्वारा मेरिट लिस्ट बनायी जायेगी।

6) विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक द्वारा बनायी गयी मेरिट लिस्ट से सम्बन्धित रिक्तियों के सापेक्ष एक पद हेतु अधिकतम 08 तथा एक से अधिक पद होने पर प्रत्येक पद हेतु अधिकतम 5 गुना अभ्यर्थियों को वरीयता क्रम के आधार पर अंतिम चयन के लिए shortlisting की जायेगी। shortlisted अभ्यर्थियों को नियत तिथि पर साक्षात्कार हेतु आमन्त्रित किया जायेगा।

7) चयन समिति द्वारा साक्षात्कार की प्रक्रिया सम्पन्न की जायेगी और साक्षात्कार के मूल्यांकन के आधार पर चयन किया जायेगा।



8) साक्षात्कार की प्रक्रिया की ऑडियो एवं वीडियो रिकार्डिंग की जायेगी और इसे कम से कम 02 वर्षों तक सुरक्षित रखने का दायित्व कुलसचिव का होगा।

यह निर्देश इस शर्त के अधीन जारी किये जाते हैं कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू0जी0सी0), मेडिकल काउंसिल आफ इण्डिया (एम0सी0आई0), आल इण्डिया काउंसिल फार टेक्निकल एजूकेशन (ए0आई0सी0टी0ई0), इंडियन काउंसिल फार एग्रीकल्चरल रिसर्च (आई0सी0ए0आर0), रिहैबिलिटेशन काउंसिल आफ इण्डिया (आर0सी0आई0) आदि विभिन्न नियामक संस्थाओं (Regulatory Bodies) के नियम, निर्देश/विनियम का अनुपालन भी होता रहे, तत्काल प्रभाव से लागू किये जाते हैं।

( आनंदीबेन पटेल )
कुलाधिपति

[illegible]

| [illegible] | [illegible] | [illegible] |
|---|---|---|
| [illegible] | [illegible] | [illegible] |

# राज्यपाल सचिवालय, उत्तर प्रदेश
लखनऊ 226027

संख्या ई [illegible]/[illegible]
दिनांक [illegible] 2021

## आदेश

[illegible] 2020 दिनांक 19 मई 2021 [illegible] 2021 [illegible]

अ. [illegible]—

1. [illegible] Short listing [illegible]

2. [illegible] 1190 [illegible] 2019 [illegible] [illegible] 2019 [illegible] F.1-2/2017(EC/PS) [illegible] 18 जुलाई 2018 [illegible] Table 3A [illegible]

3. [illegible] (Domain Knowledge) [illegible] 20 [illegible] Table 3A [illegible]

4. Table 3A [illegible]

5. [illegible]

6. [illegible] Short-listing [illegible]

7. Short listing [illegible] Short listed [illegible]

[illegible]

ख- सह आचार्य एवं आचार्यः-

1 [illegible]

2 [illegible] 2/2017(EC/95) [illegible] Table 2 [illegible]

3 [illegible]

4 [illegible] Short listing [illegible]

अन्य निर्देश

[illegible]

( आनंदीबेन पटेल )
कुलाधिपति

**राज्यपाल सचिवालय उत्तर प्रदेश**
**लखनऊ–226027**

पत्रांक : ई– 5864 / जी०एस०
दिनांक : 03, सितम्बर, 2021

प्रेषक,

श्री राज्यपाल / कुलाधिपति के अपर मुख्य सचिव,
उत्तर प्रदेश।

सेवा में,

कुलपति,
डा० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय,
लखनऊ।

महोदय,

विश्वविद्यालयों के विभिन्न शैक्षणिक पदों पर सीधी भर्ती के माध्यम से नियुक्ति हेतु साक्षात्कार में पारदर्शिता के बारे में मा० कुलाधिपति के आदेश दिनांक 18 मई, 2021 तथा दिनांक 02 जुलाई, 2021 के बारे में कृपया अपने पत्र संख्या:ए०के०टी०यू०/कु०स०/2021/11957, दिनांक 02 सितम्बर, 2021 का सन्दर्भ ग्रहण करने का कष्ट करें।

उक्त पत्र में आपके द्वारा निम्न बिन्दु पर मार्गदर्शन मांगा गया है:-

"........... सहायक आचार्य / सह आचार्य एवं आचार्य अन्तिम चयन :

- "प्रथम चरण–(Basic Academic Score एवं API+लिखित परीक्षा (100+40)/Basic Academic Score एवं API)" तथा "द्वितीय चरण–साक्षात्कार", के दोनों चरणों के अंकों के योग के आधार पर किया जाना है।

अथवा

- केवल द्वितीय चरण–साक्षात्कार" के आधार पर ही किया जाना है एवं "प्रथम चरण–(Basic Academic Score एवं API+लिखित परीक्षा (100+40)/Basic Academic Score एवं API)" Shortlisting हेतु होगा।"

उपरोक्त जिज्ञासा के क्रम में निम्नवत् स्थिति स्पष्ट की जाती है:-

1. आदेश दिनांक 02 जुलाई, 2021 में यह स्पष्ट रूप से वर्णित किया गया है कि सहायक आचार्य / सह आचार्य एवं आचार्य के पद पर चयन की प्रक्रिया के दो चरण होंगे। प्रथम चरण शार्टलिस्टिंग का होगा और दूसरा चरण साक्षात्कार का होगा।

2. पत्र दिनांक 02 जुलाई, 2021 के बिन्दु संख्या–अ के 2, 3 व 4 की व्यवस्था के अनुसार सहायक आचार्य के सन्दर्भ में शार्टलिस्टिंग की प्रक्रिया 140 अंकों के आधार पर होगी। शार्टलिस्टिंग के बारे में आदेश दिनांक 18.05.2021 में दी गयी व्यवस्था के अनुसार पारदर्शिता की व्यवस्था का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित किया जायेगा। उपरोक्तानुसार शार्टलिस्टेड अभ्यर्थियों का शिक्षण कौशल की जानकारी (कम्प्यूटर पर कार्य करने की जानकारी तथा कक्षा के समक्ष प्रस्तुतीकरण) 20 अंकों की तथा साक्षात्कार 10 अंकों का सम्पन्न कराया जायेगा और इस प्रकार 30 अंकों के आधार पर साक्षात्कार की प्रक्रिया सम्पन्न करते हुए इन्हीं 30 अंकों पर आधारित परिणाम घोषित किया जायेगा। इसमें शार्टलिस्टिंग के लिए निर्धारित 140 अंक नहीं जोड़े जायेंगे।

3. पत्र दिनांक 02 जुलाई, 2021 के बिन्दु संख्या–ब के 2, 3 व 4 की व्यवस्था के अनुसार सह आचार्य एवं आचार्य के सन्दर्भ में शार्टलिस्टिंग की प्रक्रिया सम्पन्न होगी। शार्टलिस्टिंग के बारे में आदेश दिनांक 18.05.2021 में दी गयी व्यवस्था के अनुसार पारदर्शिता की व्यवस्था का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित किया जायेगा। उपरोक्तानुसार शार्टलिस्टेड अभ्यर्थियों का साक्षात्कार 20 अंकों का सम्पन्न कराया जायेगा और इस प्रकार 20 अंकों के आधार पर साक्षात्कार की प्रक्रिया सम्पन्न करते हुए इन्हीं 20 अंकों पर आधारित परिणाम घोषित किया जायेगा। इसमें शार्टलिस्टिंग के लिए निर्धारित अंक नहीं जोड़े जायेंगे।

भवदीय,

( महेश कुमार गुप्ता )
अपर मुख्य सचिव श्री राज्यपाल।

प्रतिलिपि कुलपतिगण, समस्त राज्य विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, निदेशक, संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ/निदेशक, डा० राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

03/11/21
( डा० पंकज एल० जानी )
विशेष कार्याधिकारी, शिक्षा श्री राज्यपाल।

**विद्या परिषद् मा. कुलाधिपति महोदया के उपर्युक्त निदेश को नियुक्ति प्रक्रिया में अनुपालन किये जाने हेतु स्वीकृति प्रदान करते हुए यह भी संस्तुति की कि सहायक आचार्य एवं सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष की नियुक्ति हेतु आयोजित होने वाली लिखित परीक्षा सम्बन्धित विषयों की करायी जाय।**

अंत में माननीय कुलपति सहित समस्त सम्मानित सदस्यों के प्रति का कुलसचिव द्वारा धन्यवाद ज्ञापन बैठक सम्पन्न हुयी।

भवदीय

कुलसचिव
सं.सं.वि.वि.,वाराणसी

**विचार-विमर्श के अनन्तर कार्यपरिषद् ने सर्वसम्मत्ति से विद्यापरिषद् की बैठक दिनांक 11.11.2021 में की गयी संस्तुतियों पर अपनी स्वीकृति प्रदान की।**

**कार्यक्रम संख्या-8-** संस्कृत महाविद्यालय अध्यापकों की नियुक्तियों के सम्बन्ध में पारदर्शिता लाने के लिए परिनियम में संशोधन पर विचार।

कार्यपरिषद् के समक्ष सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी की प्रथम परिनियमावली में अधोलिखित विवरण के अनुसार संशोधन करने हेतु प्रस्ताव विचारार्थ प्रस्तुत किया गया-

**सम्बद्ध महाविद्यालय के अध्यापकों की अर्हतायें और नियुक्ति**

| क्र.सं. | वर्तमान परिनियम | संशोधित परिनियम |
|---|---|---|
| 1 | 11.13 परिनियम 11.14 से 11.32 तक किसी राज्य सरकार या संघ-क्षेत्र या स्थानीय निकाय या प्राधिकारी द्वारा अनन्य रूप से घोषित और प्रबन्धित सम्बद्ध महाविद्यालय के अध्यापकों पर लागू न होंगे। | 11.13 परिनियम 11.14 से 11.32 तक किसी राज्य सरकार या संघ-क्षेत्र या स्थानीय निकाय या प्राधिकारी द्वारा अनन्य रूप से घोषित और प्रबन्धित सम्बद्ध महाविद्यालय के अध्यापकों पर लागू न होंगे। |
| 2 | 11.14 सम्बद्ध महाविद्यालयों के अध्यापकों (जिसमें प्राचार्य भी सम्मिलित हैं) की अर्हतायें ऐसी होंगी, जैसी अध्यादेशों में निर्धारित की जाँय। | 11.14 सम्बद्ध महाविद्यालयों के अध्यापकों (जिसमें प्राचार्य भी सम्मिलित हैं) की अर्हतायें ऐसी होंगी, जैसी अध्यादेशों में निर्धारित की जाँय। |
| 3 | 11.15 प्रबन्धतन्त्र सम्बद्ध महाविद्यालयों के प्राचार्य और अध्यापकों को सरकार द्वारा अनुमोदित पदों पर, पूर्णकालिक आधार पर और सम्बद्ध राज्य सरकार या संघ-क्षेत्र या स्थानीय निकाय या प्राधिकारी द्वारा अनुमोदित वेतनमान में चयन समिति की सिफारिश पर एतत्पश्चात् उपबन्धित रीति से नियुक्त करेगा। | 11.15 सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से सम्बद्ध महाविद्यालयों के प्राचार्य और अध्यापकों को सरकार द्वारा अनुमोदित पदों पर, पूर्णकालिक आधार पर और सम्बद्ध राज्य सरकार या संघ-क्षेत्र या स्थानीय निकाय या प्राधिकारी द्वारा अनुमोदित वेतनमान में चयन समिति की सिफारिश पर एतत्पश्चात् उपबन्धित रीति से नियुक्त करेगा। चयन के दो चरण होंगे - 1. लिखित 2. साक्षात्कार |
| 4 | 11.16(1) किसी सम्बद्ध महाविद्यालय के प्राचार्य की नियुक्ति के लिये चयन-समिति में निम्नलिखित होंगेः-<br>(क) प्रबन्धतन्त्र का प्रधान या उसके द्वारा नाम-निर्दिष्ट प्रबन्धतन्त्र का कोई सदस्य (जो महाविद्यालय का प्राचार्य या अध्यापक न हो), जो अध्यक्ष होगा।<br>(ख) सम्बद्ध सम्भाग का सम्भागीय उपशिक्षा निदेशक।<br>(ग) किसी उपाधि या स्नातकोत्तर महाविद्यालय का एक प्राचार्य, जिसे कम से कम 10 वर्ष के अध्यापन का अनुभव हो, जो कुलपति द्वारा नाम-निर्दिष्ट किया जायेगा।<br>(घ) दो विशेषज्ञ, जिन्हें कम से कम 15 वर्ष के अध्यापन का अनुभव हो, जिनमें से एक विश्वविद्यालय का अध्यापक या उस महाविद्यालय के जिसके लिए चयन किया जा रहा है, समीप स्थित सम्बद्ध महाविद्यालय में संस्कृत विभाग का प्रधान होगा और दूसरा किसी समान या उच्चत्तर वर्ग के किसी सम्बद्ध महाविद्यालय का प्राचार्य या अध्यापक या सम्बद्ध विषय का कोई ऐसा सेवानिवृत्त अध्यापक या अन्य विद्यावान् व्यक्ति होगा, जो उपशिक्षा निदेशक के सम्भाग में निवास करता हो, जिन्हें कुलपति द्वारा सम्बन्धित सम्भाग के उप-शिक्षा निदेशक द्वारा तैयार किये गये पैनल में नाम निर्दिष्ट किया जायेगा।<br>परन्तु आधुनिक विषयों के लिए, इस प्रकार तैयार किये गये पैनल में, कुलपति द्वारा किसी अन्य विश्वविद्यालय से सम्बद्ध ऐसे निकटतम महाविद्यालय से भी, जो सम्बन्धित उपशिक्षा निदेशक के सम्भाग के आसन्न हो, विशेषज्ञ सम्मिलित किये जा सकते हैं :<br>परन्तु यह और कि उत्तर प्रदेश के बाहर स्थित महाविद्यालयों के सम्बन्ध में कुलपति ऐसे महाविद्यालयों के, जो उस महाविद्यालय के निकट स्थित हों, उसके लिए चयन किया जाना है, अध्यापकों और उस महाविद्यालय के, जिसके लिए चयन किया जाना है, अध्यापकों और उस महाविद्यालय के, जिसके लिए चयन किया जाना है, निकट निवास करने वाले विद्यावान् व्यक्तियों के अपने द्वारा तैयार किये गये पैनल में से विशेषज्ञ नाम-निर्दिष्ट कर सकते हैं।<br>(2) किसी सम्बद्ध महाविद्यालय के अध्यापक (प्राचार्य से भिन्न) की नियुक्ति के लिए चयन समिति में निम्नलिखित होंगे :-<br>(क) प्रबन्धतन्त्र का प्रधान या उसके द्वारा नाम निर्दिष्ट प्रबन्धतन्त्र का कोई सदस्य ( जो महाविद्यालय का प्राचार्य या अध्यापक न हो) जो अध्यक्ष होगा,<br>(ख) महाविद्यालय का प्राचार्य,<br>(ग) सम्बद्ध जिले का जिला विद्यालय निरीक्षक,<br>(घ) दो विशेषज्ञ, जिन्हें कम से कम 10 वर्ष के अध्यापन का अनुभव हो, जो उस जिले से, जिसमें महाविद्यालय स्थित हो, भिन्न जिले में समान या उच्चतर वर्ग के किसी सम्बद्ध महाविद्यालय का अध्यापक या प्राचार्य या सम्बद्ध विषय का कोई ऐसा सेवानिवृत्त अध्यापक या विद्वान् व्यक्ति होगा, जो उपशिक्षा निदेशक के सम्भाग में निवास करता हो, जिन्हें कुलपति द्वारा सम्बन्धित सम्भाग के उपशिक्षा निदेशक द्वारा तैयार किये गये पैनल में से नाम-निर्दिष्ट किया जायेगा।<br>परन्तु आधुनिक विषयों के लिए, इस प्रकार तैयार किये गये पैनल में, कुलपति द्वारा किसी अन्य विश्वविद्यालय से सम्बद्ध ऐसे निकटतम महाविद्यालय से भी, जो सम्बन्धित उपशिक्षा निदेशक के सम्भाग के आसन्न हो, विशेषज्ञ सम्मिलित किये जा सकते हैं :<br>परन्तु यह और कि उत्तर प्रदेश के बाहर स्थित महाविद्यालयों के सम्बन्ध में कुलपति ऐसे महाविद्यालयों के, जो उस महाविद्यालय के निकट स्थित हों, उसके लिए चयन किया जाना है, अध्यापकों और उस महाविद्यालय के, जिसके लिए चयन किया जाना है, अध्यापकों और उस महाविद्यालय के, जिसके लिए चयन किया जाना है, निकट निवास करने वाले विद्यावान् व्यक्तियों के अपने द्वारा तैयार किये गये पैनल में से विशेषज्ञ नाम-निर्दिष्ट कर सकते हैं। | 11.16(1) किसी सम्बद्ध महाविद्यालय के प्राचार्य की नियुक्ति के लिये चयन-समिति में निम्नलिखित होंगेः-<br>(क) सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के कुलपति या उसके द्वारा नाम-निर्दिष्ट कोई आचार्य (जो महाविद्यालय का प्राचार्य या अध्यापक न हो), जो अध्यक्ष होगा। प्रबन्धतन्त्र का प्रधान या उसके द्वारा नाम-निर्दिष्ट प्रबन्धतन्त्र का कोई सदस्य (जो महाविद्यालय का प्राचार्य या अध्यापक न हो), जो सदस्य-सचिव होगा।<br>(ख) सम्बद्ध सम्भाग का सम्भागीय उपशिक्षा निदेशक।<br>(ग) किसी उपाधि या स्नातकोत्तर महाविद्यालय का एक प्राचार्य, जिसे कम से कम 10 वर्ष के अध्यापन का अनुभव हो, जो कुलपति द्वारा नाम-निर्दिष्ट किया जायेगा।<br>(घ) दो विशेषज्ञ, जिन्हें कम से कम 15 वर्ष के अध्यापन का अनुभव हो, जिनमें से एक विश्वविद्यालय का अध्यापक या उस महाविद्यालय के जिसके लिए चयन किया जा रहा है, समीप स्थित सम्बद्ध महाविद्यालय में संस्कृत विभाग का प्रधान होगा और दूसरा किसी समान या उच्चत्तर वर्ग के किसी सम्बद्ध महाविद्यालय का प्राचार्य या अध्यापक या सम्बद्ध विषय का कोई ऐसा सेवानिवृत्त अध्यापक या अन्य विद्यावान् व्यक्ति होगा, जो उपशिक्षा निदेशक के सम्भाग में निवास करता हो, जिन्हें कुलपति द्वारा सम्बन्धित सम्भाग के उप-शिक्षा निदेशक द्वारा तैयार किये गये पैनल में नाम निर्दिष्ट किया जायेगा।<br>परन्तु आधुनिक विषयों के लिए, इस प्रकार तैयार किये गये पैनल में, कुलपति द्वारा किसी अन्य विश्वविद्यालय से सम्बद्ध ऐसे निकटतम महाविद्यालय से भी, जो सम्बन्धित उपशिक्षा निदेशक के सम्भाग के आसन्न हो, विशेषज्ञ सम्मिलित किये जा सकते हैं :<br>परन्तु यह और कि उत्तर प्रदेश के बाहर स्थित महाविद्यालयों के सम्बन्ध में कुलपति ऐसे महाविद्यालयों के, जो उस महाविद्यालय के निकट स्थित हों, उसके लिए चयन किया जाना है, अध्यापकों और उस महाविद्यालय के, जिसके लिए चयन किया जाना है, अध्यापकों और उस महाविद्यालय के, जिसके लिए चयन किया जाना है, निकट निवास करने वाले विद्वान् व्यक्तियों के अपने द्वारा तैयार किये गये पैनल में से विशेषज्ञ नाम-निर्दिष्ट कर सकते हैं।<br>(2) किसी सम्बद्ध महाविद्यालय के अध्यापक (प्राचार्य से भिन्न) की नियुक्ति के लिए चयन समिति में निम्नलिखित होंगे :-<br>(क) सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के कुलपति या उसके द्वारा नाम-निर्दिष्ट कोई आचार्य (जो महाविद्यालय का प्राचार्य या अध्यापक न हो), जो अध्यक्ष होगा। प्रबन्धतन्त्र का प्रधान या उसके द्वारा नाम-निर्दिष्ट प्रबन्धतन्त्र का कोई सदस्य (जो महाविद्यालय का प्राचार्य या अध्यापक न हो), जो सदस्य-सचिव होगा।<br>(ख) महाविद्यालय का प्राचार्य,<br>(ग) सम्बद्ध जिले का जिला विद्यालय निरीक्षक,<br>(घ) दो विशेषज्ञ, जिन्हें कम से कम 10 वर्ष के अध्यापन का अनुभव हो, जो उस जिले से, जिसमें महाविद्यालय स्थित हो, भिन्न जिले में समान या उच्चतर वर्ग के किसी सम्बद्ध महाविद्यालय का अध्यापक या प्राचार्य या सम्बद्ध विषय का कोई ऐसा सेवानिवृत्त अध्यापक या विद्वान् व्यक्ति होगा, जो उपशिक्षा निदेशक के सम्भाग में निवास करता हो, जिन्हें कुलपति द्वारा सम्बन्धित सम्भाग के उपशिक्षा निदेशक द्वारा तैयार किये गये पैनल में से नाम-निर्दिष्ट किया जायेगा।<br>परन्तु आधुनिक विषयों के लिए, इस प्रकार तैयार किये गये पैनल में, कुलपति द्वारा किसी अन्य विश्वविद्यालय से सम्बद्ध ऐसे निकटतम महाविद्यालय से भी, जो सम्बन्धित उपशिक्षा निदेशक के सम्भाग के आसन्न हो, विशेषज्ञ सम्मिलित किये जा सकते हैं :<br>परन्तु यह और कि उत्तर प्रदेश के बाहर स्थित महाविद्यालयों के सम्बन्ध में कुलपति ऐसे महाविद्यालयों के, जो उस महाविद्यालय के निकट स्थित हों, उसके लिए चयन किया जाना है, अध्यापकों और उस महाविद्यालय के, जिसके लिए चयन किया जाना है, अध्यापकों और उस महाविद्यालय के, जिसके लिए चयन किया जाना है, निकट निवास करने वाले विद्वान् व्यक्तियों के अपने द्वारा तैयार किये गये पैनल में से विशेषज्ञ नाम-निर्दिष्ट कर सकते हैं। |

**कार्यपरिषद् ने उपरोक्त प्रस्ताव पर गम्भीरतापूर्वक विचार-विमर्श करने के पश्चात् सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के प्रथम परिनियमावली में उपरोक्त प्रस्ताव के अनुसार संशोधन पर अपनी स्वीकृति प्रदान की।**

**अध्यक्ष की अनुमति से अन्य विषयों पर विचार।**

1. संस्कृत महाविद्यालय के भूमि का सरकार द्वारा संरक्षण के सम्बन्ध में विचार।

   कार्यपरिषद् को अवगत कराय गया कि विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कतिपय संस्कृत महाविद्यालयों की भूमि का सम्बन्धित महाविद्यालयों के प्रबंधतन्त्र द्वारा व्यवसायिक उपयोग किया जा रहा है साथ ही उसके विक्रय का भी प्रयास किया जा रहा है, जो अनुचित एवं अनियमित तथा नियम विरूद्ध है।

   **कार्यपरिषद् उक्त पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने के पश्चात् निर्णय लिया कि कुछ ऐसी व्यवस्था की जाय कि संस्कृत महाविद्यालयों की भूमि का दुरूपयोग न हो साथ ही शासन से भी अनुरोध किया जाय कि महाविद्यालयों की भूमि के संरक्षण करने हेतु कोई व्यवस्था करें।**

2. विश्वविद्यालय की भूमि को विश्वविद्यालय के नाम अंकित कराने के संबंध में विचार।

   कार्यपरिषद् को अवगत कराया गया कि राजकीय संस्कृत कालेज, वाराणसी को वर्ष 1958 में संस्कृत विश्वविद्यालय के रूप में उन्नयन किया गया था और उसकी सम्पत्ति, भूमि आदि विश्वविद्यालय की सम्पत्ति हो गयी। कुछ भूमि आदि विश्वविद्यालय बनने के बाद दान स्वरूप विश्वविद्यालय को प्राप्त कराया गया था। परन्तु उक्त भूमि का नामान्तरण अभी तक विश्वविद्यालय के नाम से नही है।

**कार्यपरिषद् उक्त पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने के पश्चात् निर्णय लिया कि विश्वविद्यालय की भूमि जो विश्वविद्यालय के अधिकार एवं कब्जे में विश्वविद्यालय के स्थापना काल से है, उसे विश्वविद्यालय के नाम कराने हेतु विधिक कार्यवाही के साथ-साथ शासन से भी अनुरोध किया जाय कि विश्वविद्यालय के कब्जे में जो भूमि विश्वविद्यालय के स्थापना काल से है, उसे विश्वविद्यालय के नाम करने हेतु सम्बन्धित विभाग को निर्देश प्रदान करें।**

3. विश्वविद्यालय स्थित आयुर्वेद भवन विश्वविद्यालय को हस्तान्तरित कराने के सम्बन्ध में विचार।

कार्यपरिषद् को अवगत कराया गया कि वर्तमान में स्थित राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, वाराणसी विश्वविद्यालय के संकाय के रूप में विश्वविद्यालय परिसर में संचालित की जाती थी। परन्तु बाद में यही आयुर्वेद संकाय को राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, वाराणसी के रूप में उ.प्र.शासन ने परिवर्तित कर दिया। इस राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय की अपनी भूमि आदि न होने के कारण विश्वविद्यालय परिसर से ही यह संस्था संचालित होती थी, परन्तु अब राजकीय महाविद्यालय का विश्वविद्यालय परिसर से बाहर भवन आदि निर्मित हो गया है और वही से वर्तमान में संचालित हो रही है। परिसर के बाहर के भवन से संचालित होने के पश्चात् भी उक्त महाविद्यालय ने विश्वविद्यालय परिसर स्थित विश्वविद्यालय के भवन को अभी तक रिक्त नही किया है।

**उक्त के क्रम में विचार-विमर्श करने के पश्चात् कार्यपरिषद् ने निर्णय लिया कि विश्वविद्यालय की आवश्यकता को दृष्टि में रखते हुए राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय से परिसर स्थित भवन रिक्त कराने हेतु उ.प्र.शासन को पत्र प्रेषित कर अनुरोध किया जाय।**

4- सहायक पुस्तकाध्यक्ष पद हेतु प्राप्त आवेदनों के प्राथमिक मूल्याङ्कन हेतु गठित समिति की संस्तुति पर विचार।

कार्यपरिषद् के समक्ष सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष पद हेतु प्राप्त आवेदनों के प्राथमिक मूल्यांकन हेतु गठित समिति की अधोलिखित संस्तुति की गयी।

कार्यवृत्त

आज दिनाङ्क 06.11.2021 शनिवार को 2.00 बजे अपराह्न कुलपति [illegible] सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष पद हेतु प्राप्त आवेदनों के प्राथमिक मूल्याङ्कन हेतु गठित समिति की बैठक आहूत की गई। जिसमें निम्नलिखित सदस्यों ने सहभागिता की –

1. प्रो. डी.के. सिंह, पुस्तकालयाध्यक्ष, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
2. डॉ. राजेश कुमार सिंह, उप पुस्तकालयाध्यक्ष, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
3. प्रो. शैलेश कुमार मिश्र, समन्वयक, आई.क्यू.ए.सी.।
4. डा. राजा पाठक, सह-समन्वयक, आई.क्यू.ए.सी.।
5. डॉ. मधुसूदन मिश्र, सदस्य, आई.क्यू.ए.सी.।

बैठक में समिति ने सर्वसम्मति से सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष के शार्ट लिस्टिंग एवं योग्यता मूल्यांकन के विषय में यू0जी0सी0 रेग्युलेशन 2018, पृष्ठ सं. 107 मे दिये गये तालिका 3A में वर्णित सहायक आचार्य के लिए दिये गए अंक प्रणाली को ही अपनाने का निर्णय लिया है।

संलग्नक –

1. Criteria for short listing of Candidates for Interview for the Post of Assistant Professor in Universities.
2. उदाहरणार्थ प्रतिरूप।

ii) Desirable: Higher Qualification, such as Ph.D. degree in any discipline of Physiotherapy recognised by the U.G.C. and published work of high standard in peer-reviewed or UGC - listed journals.

**III. PROFESSOR:**

Essential: Master's Degree in Physiotherapy (M.P.T. / M.P.Th./M.Th.P./M.Sc. P.T.), with ten years experience.

Desirable:

(i) Higher Qualification like Ph. D. in any subject of Physiotherapy recognised by U.G.C. and

(ii) Published work of high standard in peer -reviewed or UGC- listed journals.

**IV. PRINCIPAL / DIRECTOR / DEAN:**

Essential: Master's Degree in Physiotherapy (M.P.T./M.Th.P./M.Pth/M.Sc. P.T.) with fifteen years total experience, including five years experience as Professor (Physiotherapy).

Note:

(i) Senior-most Professor shall be designated as the Principal / Director / Dean.

(ii) Desirable: Higher qualification like Ph.D. in any subject of Physiotherapy recognised by the UGC and published work of high standard in peer reviewed or UGC listed journals.

**MINIMUM QUALIFICATIONS FOR DIRECT RECRUITMENT TO THE POSTS OF UNIVERSITY ASSISTANT LIBRARIAN / COLLEGE LIBRARIAN, UNIVERSITY DEPUTY LIBRARIAN AND UNIVERSITY LIBRARIAN**

**I. UNIVERSITY ASSISTANT LIBRARIAN / COLLEGE LIBRARIAN**

i) A Master's Degree in Library Science, Information Science or Documentation Science or an equivalent professional degree, with at least 55% marks (or an equivalent grade in a point -scale, wherever the grading system is followed).

ii) A consistently good academic record, with knowledge of computerisation of a library.

iii) Besides fulfilling the above qualifications, the candidate must have cleared the National Eligibility Test (NET) conducted by the UGC, CSIR or similar test accredited by the UGC like SLET/SET or who are or have been awarded a Ph.D. Degree in accordance with the University Grants Commission (Minimum Standards and Procedure for Award of M.Phil./Ph.D. Degree) Regulations, 2009 or 2016 and their amendments from time to time as the case may be:

*Provided* that the, candidates registered for the Ph.D. degree prior to July 11, 2009, shall be governed by the provisions of the then existing Ordinances / Bye-laws / Regulations of the Institution awarding the degree, and such Ph.D. candidates shall be exempted from the requirement of NET/SLET/SET for recruitment and appointment of Assistant Professor or equivalent positions in Universities/Colleges / Institutions subject to the fulfillment of the following conditions:-

a) The Ph.D. degree of the candidate has been awarded in the regular mode

b) The Ph.D. thesis has been evaluated by at least two external examiners;

c) Open Ph.D. viva voce of the candidate has been conducted;

d) The candidate has published two research papers from his/her Ph.D. work out of which at least one is in a refereed journal;

e) The candidate has presented at least two papers based on his/her Ph.D work in conferences/seminars sponsored /funded/supported by the UGC/ICSSR/CSIR or any similar agency.

Note:

(i) *The fulfilment of these conditions is to be certified by the Registrar or the Dean (Academic Affairs) of the University concerned.*

(ii) NET/SLET/SET shall also not be required for candidates in such Master's Programmes for which NET/SLET/SET is not conducted by the UGC, CSIR or similar test accredited by the UGC like SLET/SET.



Note:

- Paper presented if part of edited book or proceeding then it can be claimed only once.
- For joint supervision of research students, the formula shall be 70% of the total score for Supervisor and Co-supervisor. Supervisor and Co-supervisor, both shall get 7 marks each.
- *For the purpose of calculating research score of the teacher, the combined research score from the categories of 5(b). Policy Document and 6. Invited lectures/Resource Person/Paper presentation shall have an upper capping of thirty percent of the total research score of the teacher concerned.
- The research score shall be from the minimum of three categories out of six categories.

**Table: 3 A**

**Criteria for Short-listing of Candidates for Interview for the Post of Assistant Professors in Universities**

| S.N. | Academic Record | Score | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | **Graduation** | 80% & Above = 15 | 60% to less than 80% = 13 | 55% to less than 60% = 10 | 45% to less than 55% = 05 |
| 2. | **Post-Graduation** | 80% & Above = 25 | 60% to less than 80% = 23 | 55% (50% in case of SC/ST/OBC (non-creamy layer)/PWD) to less than 60% = 20 | |
| 3. | **M.Phil.** | 60% & above = 07 | 55% to less than 60% = 05 | | |
| 4. | **Ph.D.** | 30 | | | |
| 5. | **NET with JRF** | 07 | | | |
| | **NET** | 05 | | | |
| | **SLET/SET** | 03 | | | |
| 6. | **Research Publications ( 2 marks for each research publications published in Peer-Reviewed or UGC-listed Journals)** | 10 | | | |
| 7. | **Teaching / Post Doctoral Experience (2 marks for one year each)#** | 10 | | | |
| 8. | **Awards** | | | | |
| | International / National Level (Awards given by International Organisations/ Government of India / Government of India recognised National Level Bodies) | 03 | | | |
| | State-Level (Awards given by State Government) | 02 | | | |

*#However, if the period of teaching/Post-doctoral experience is less than one year then the marks shall be reduced proportionately.*

Note:

(A) (i) M.Phil + Ph.D Maximum - 30 Marks

(ii) JRF/NET/SET Maximum - 07 Marks

(iii) In awards category Maximum - 03 Marks

(B) Number of candidates to be called for interview shall be decided by the concerned universities.

Name:

| 1 Graduation | 2 Post Graduation | 3 M. phil | 4 Ph.D | 5 Net with JRF | 6 NET | 7 SLET/SET | 8 Research Publications (2 Marks for each research publications published in Peer- reviewed or UGC listed journals | 9 Working/ Teaching experience (2 Marks for one year each) | 10 Award | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | International Level | State Level |
| 80% Above = 15 | 80% Above = 25 | 60% Above = 07 | 30 | 07 | 05 | 03 | | | | |
| 60% to less than 80% = 13 | 60% to less than 80% = 23 | 55% to less than60% = 05 | | | | | | | | |
| 55% to less than 60% = 10 | 55%(50% in case of sc/st/obc (non-creamy layer)/PWD (l) to less than 60%=20 | | | | | | | | | |
| 45% to less than 55% = 05 | | | | | | | | | | |

**समिति की संस्तुति पर विचार-विमर्श करने के पश्चात् कार्यपरिषद् ने सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष के पद की शार्ट लिस्टिंग एवं योग्यता मूल्यांकन के विषय में यू.जी.सी. रेग्युलेशन-2018, पृष्ठ सं.107 में दिये गये दिये गये तालिका 3ए. में वर्णित सहायक आचार्य के लिए दिये गए अंक प्रणाली को ही अपनाने हेतु अपनी स्वीकृति प्रदान की।**

अंत में माननीय अध्यक्ष महोदय ने सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापन करते हुए सभा विसर्जन करने की घोषणा की।

**कुलसचिव**
**सं.सं.वि.वि.,वाराणसी**

13/11/2021